Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

गर्भवती ने कहें डाकोतरो,
थारें होसी पुत्र अनूप।
पाडोसण ने कहें होसी डीकरी,
ते पिण अतंत करूप।।
- आचार्य श्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 26 • अंक 03 • 21 अक्टूबर-27 अक्टूबर, 2024 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 19-10-2024 • पेज 20 • ₹ 10 रुपये

लोगुत्तमे समणे णायपुत्ते

भगवान महावीर के 2551 वें निर्वाण दिवस पर

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स परिवार

की ओर से हार्दिक भावांजलि

ज्ञान दर्शन चरित्र तप

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
21 अक्टूबर-27 अक्टूबर, 2024

मोक्ष के लिए पुण्य कर्मों का त्याग भी है आवश्यक : आचार्यश्री महाश्रमण

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के तत्वावधान में 8वीं कॉर्पोरेट कॉन्फ्रेंस का हुआ आयोजन

सूरत।
12 अक्टूबर, 2024

नवरात्र का अंतिम दिवस। महातपस्वी शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी ने नवान्हिक आध्यात्मिक अनुष्ठान के प्रातः कालीन अंतिम सत्र का सम्पन्न करवाया। मोक्ष मार्ग के पथदर्शक आचार्यश्री महाश्रमणजी ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फ़रमाया- 'आयारो आगम' में बताया गया है कि प्राणी के दुःख का कारण कर्म है। आश्रव से कर्मों का अर्जन होता है, और अशुभ कर्म दुःख का कारण बन सकते हैं। आश्रव से दोनों प्रकार के कर्म- शुभ और अशुभ - अर्जित होते हैं।

आश्रव के पांच मूल भेद बताए गए हैं, जिनमें से साढ़े चार प्रकार के आश्रव पाप कर्म उत्पन्न करते हैं। आधे आश्रव से पुण्य कर्म का बंध होता है। शुभ योग से पुण्य का बंधन हो सकता है, जबकि मिथ्यात्व, प्रमाद, अव्रत, कषाय और अशुभ योग से पाप कर्मों का बंध होता है। आश्रव को पानी के नाले के समान कहा गया है। पुण्य भी अंततः छोड़ने योग्य होता है, क्योंकि आत्मिक सुख निर्जरा से मिलता है।

आयारों में कहा गया है कि दुःख का कारण कर्म हैं, इसलिए कर्म का परिज्ञान करो और पाप कर्म के बंधन से बचने का प्रयास करो। आठ कर्मों में ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अंतराय कर्म एकांतिक रूप से पाप कर्म होते हैं। वेदनीय, नाम, आयुष्य, और गोत्र कर्म शुभ और अशुभ दोनों हो सकते हैं। इस प्रकार, 75% कर्म पाप से जुड़े होते हैं, जबकि 25% कर्म पुण्य के होते हैं। हालांकि, मोक्ष पाने के लिए पुण्य कर्मों का भी त्याग आवश्यक है।

कर्मों के अलग-अलग फल होते हैं। उनके हल्केपन से विकास हो सकता है, जबकि उनके उदय से विकास रुक सकता है। कर्मों के बंधन के भिन्न-भिन्न कारण हो सकते हैं, इसलिए मन में अनुकंपा, दया और करुणा का भाव रखना चाहिए। सम्यक दृष्टि रखने वाले व्यक्ति को केवल वैमानिक देवगति का बंध हो सकता है। तीर्थंकर नाम गोत्र का बंध होने पर तीसरे जन्म में वह तीर्थंकर बनेगा। यह सब कर्मों का ही खेल है, इसलिए हमें पाप कर्म से बचने का प्रयास करना चाहिए।

साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशाजी ने कहा कि सम्यकत्व के बिना मोक्ष संभव नहीं है। सम्यकत्व रूपी बीज को समझना आवश्यक है। जिस जीव को एक बार सम्यकत्व का स्पर्श हो जाता है, वह संसार के परिताप से मुक्त हो जाता है। उसके जन्म-मरण और संसार-भ्रमण की सीमा तय हो जाती है।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के तत्वावधान में आज 8वीं कॉर्पोरेट कॉन्फ्रेंस का आयोजन पूज्यवर की सन्निधि में हुआ। मंचीय कार्यक्रम में ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। पूज्यवर ने आशीर्वचन प्रदान किए।

आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम द्वारा आठवीं राष्ट्रीय कॉर्पोरेट कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया। इस संदर्भ में टीपीएफ फेमिना टीम ने मंगलाचरण किया। टीपीएफ-सूरत के अध्यक्ष कैलाश झाबक ने अपने विचार व्यक्त किये। आचार्यप्रवर ने इस संदर्भ में पावन पाथेय प्रदान किया।

इस कार्यक्रम का संचालन तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के महामंत्री मनीष कोठारी ने किया। प्रेक्षा मरोठी ने अपनी अभिव्यक्ति दी। सज्जन पारख, सरिता सेखानी, हर्षलता दुधोड़िया, ज्योति व सुनीता सुराणा ने गीत का संगान किया। कुमारपाल देसाई द्वारा लिखित पुस्तक 'कुमारपाल देसाई अभिवादन ग्रन्थ' पुस्तक आचार्यश्री के समक्ष गुर्जर प्रकाशन की ओर से लोकार्पित की गई। आचार्यश्री ने इस संदर्भ में अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

बंधन में रहते हुए भी मुक्त व्यक्ति होते हैं कुशल : आचार्य श्री महाश्रमण

सूरत।
15 अक्टूबर, 2024

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम् अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'आयारो' आगम आधारित मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि इस संसार में जीने वाला प्राणी बंधन युक्त होता है, लेकिन ऐसे भी मनुष्य होते हैं जो बंधन में रहते हुए भी एक सीमा तक बंधन मुक्त होते हैं। जो कुशल होते हैं, वे बंधन में भी होते हैं और मुक्त भी होते हैं।

एक शब्द है—जीवन मुक्त। जीते हुए भी मुक्त होना, मुक्त रहना। जो व्यक्ति अतीत में नहीं खोता, भविष्य की कल्पना नहीं करता, और वर्तमान में जो कुछ प्राप्त है, उसमें समता और तटस्थता बनाए रखता है, यह जीवन मुक्त व्यक्ति का लक्षण है। जो सुविहीत होते हैं, जिन्होंने मद और मदन को जीत लिया, जो मानसिक, वाचिक और कायिक विकारों से मुक्त हैं, और जो आशा-लालसा से निवृत्त हो गए हैं, ऐसे शरीरधारी मनुष्य के लिए मानो यहीं मोक्ष हो गया है।

जो कुशल और अप्रमत साधु होते हैं, वे आसक्ति में नहीं पड़ते, पर प्रवृत्ति करते हैं। वे प्रवृत्ति से मुक्त नहीं होते और आसक्ति से बंधे नहीं रहते। वीतराग साधु साम्परायिक बंधन से बंधे नहीं होते और ऐर्यापथिक से मुक्त नहीं होते। केवल ज्ञानी साधु चार घाति कर्मों से बंधे नहीं होते और चार अघाति कर्मों से मुक्त नहीं होते। वे साधना में कुशल होते हैं। अध्यात्म जगत में कुशल होना, एक उच्च भूमिका पर आरूढ़ होना है।

मानव जीवन में 'कुशल' शब्द का उपयोग विभिन्न प्रकार के कौशलों के लिए किया जाता है। कोई व्यक्ति किसी कार्य, प्रबंधन, लिपिकला, या पाककला में कुशल होता है। कार्य कौशल का विकास एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। साधु-साध्वियों में भी सुंदर लेखनी वाले होते हैं, जबकि कुछ की लेखनी में अशुद्धियाँ हो सकती हैं। शुद्ध लेखन लिपिकला का अहम हिस्सा है। भाषण देने और गाने में भी कुशलता महत्वपूर्ण होती है। वक्ता की स्पष्ट भाषा और अच्छा ज्ञान लोगों को प्रभावित करते हैं, जबकि एक कुशल गायक श्रोताओं के लिए तृप्तिदायक होता है।

साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशाजी ने उद्बोधन देते हुए कहा कि मनुष्य के पास दो बड़ी संपदाएं होती हैं—बाहरी संपदा और भीतरी संपदा। बाहरी संपदा से भीतरी संपदा अधिक महत्वपूर्ण होती है, पर वह दिखाई नहीं देती।

मनुष्य के पास ज्ञान, चिंतन, विवेक, निर्णय करने की शक्ति और परिष्कृत शक्ति होती है। इसके अलावा, आध्यात्मिक विकास भी मनुष्य के पास एक बहुत बड़ी संपदा है। त्याग की संपदा भी मनुष्य के पास होती है। प्रत्याख्यान के माध्यम से जीव आश्रव के द्वार को रोक सकता है। बहुश्रुत परिषद सदस्य मुनि उदितकुमारजी ने सूरत में हुई तपस्याओं का उल्लेख करते हुए दीपावली पर तेला अनुष्ठान करने की प्रेरणा दी। पूज्यवर ने तपस्याओं का प्रत्याख्यान करवाया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

चिंतनशील और अपरिग्रही साधु होता है मोक्ष मार्ग की ओर अग्रसर : आचार्य श्री महाश्रमण

सूरत।
10 अक्टूबर, 2024

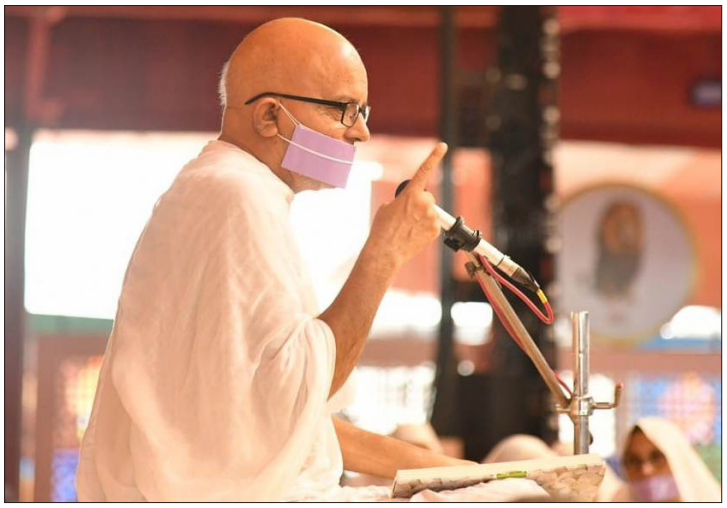

महावीर पथ के महापथिक आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अपनी अमृतमयी वाणी में 'आयारो' आगम का विवेचन करते हुए कहा कि साधु वह है जिसके पास अपरिग्रह का धन है। परिग्रह का धन भौतिक धन है, जबकि अपरिग्रह का धन आध्यात्मिक होता है। साधु के पास कई प्रकार का धन हो सकता है, जिनमें से एक महत्वपूर्ण धन है—अपरिग्रह और अकिंचनता।

परिग्रह का धन, जो गृहस्थों के पास होता है, वह तुच्छ होता है। अपरिग्रह का धन महान होता है। जो अकिंचन है, वह तीन लोकों का धनी है। जो साधु लोक-संयोग—माता-पिता, आदि से ऊपर उठ जाता है, वह नायक कहलाता है। नायक यानी नेता, जिसमें विशेष गुण होना चाहिए। जिनमें उत्तम अर्हता होती है, वे ही अच्छा नेतृत्व कर सकते हैं।

नेता में सहनशीलता और धैर्य होना चाहिए। नेता को आलोचना का सामना करना पड़ सकता है पर निंदा का जवाब शब्दों से नहीं, अच्छे कार्यों से देना चाहिए। गालियां सुनकर भी धैर्य नहीं खोना चाहिए। नेता को आत्म-सुधार पर ध्यान देना चाहिए। परिश्रम सफलता की कुंजी है और जो परिश्रमशील होता है, उसके पास लक्ष्मी (समृद्धि) आती है। जितना बड़ा नेता होता है, उसमें उतनी ही ऊंची अर्हताएँ होनी चाहिए। नेता बनना सेवा का कार्य है। नेता को अपने साथियों की बातें शांति से सुननी चाहिए और अपने कार्य का विभाजन करना चाहिए। उसे चिंतनशील और अपरिग्रही होना चाहिए। ऐसा साधु स्वयं मोक्ष की ओर अग्रसर होता है और दूसरों को भी मोक्ष मार्ग की ओर प्रेरित करता है।

अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित प्रसिद्ध उद्योगपति रतन टाटा के देहावसान पर पूज्यवर ने उनके प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना व्यक्त करते हुए कहा कि यह संसार का नियम है कि हर व्यक्ति जन्म लेता है, जीवन जीता है, और एक दिन इस दुनिया से विदा हो जाता है। चाहे वह उद्योगपति हो या साधारण व्यक्ति, यह नियम सभी पर लागू होता है। उनकी आत्मा आध्यात्मिक उन्नति करे और कभी मोक्ष प्राप्त करे—यह हमारी मंगलकामना है। तेरापंथ महिला मंडल, सूरत द्वारा समृद्ध राष्ट्र परियोजना के अंतर्गत संरक्षण में लिए गए दो स्थानीय विद्यालयों के विद्यार्थी पूज्यवर की सन्निधि में पहुंचे। पूज्यवर ने आशीर्वचन देते हुए छात्रों को सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की तीन प्रतिज्ञाओं को समझाकर उन्हें स्वीकार करवाया। तेरापंथ महिला मण्डल-सूरत की अध्यक्षा चंदा भोगर ने अपनी अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

चिंतन की धारा बदलने से संभव है दुःख मुक्ति : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।
11 अक्टूबर, 2024

श्रद्धा, धृति, शक्ति और शांति संपन्न आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अपने मंगल प्रेरणा पाथेय के माध्यम से फ़रमाया - 'आयारो' आगम में बताया गया है कि संसार में मनुष्यों के लिए दुःख और सुख दोनों होते हैं। दुःख जन्म, बुढ़ापा, बीमारी और मृत्यु के संदर्भ में हो सकता है। यह शारीरिक और मानसिक दुःख के विभिन्न रूपों में भी प्रकट हो सकता है।

हम दुःख को दो भागों में बाँट सकते हैं—'जरा' और 'शोक'। शारीरिक कष्ट को 'जरा' कहते हैं और मानसिक कष्ट को 'शोक'। प्रश्न यह है कि आदमी दुःख से मुक्त कैसे बने? और दुःख मुक्ति का मार्ग बताने वाले कौन हैं? जो कुशल हैं—जैसे गणधर, आचार्य, और साधु—वे दुःख मुक्ति का मार्ग बताते हैं। ये धर्म कथा लब्धि संपन्न होते हैं और जैसा कहते हैं वैसा करते हैं। वे जितेंद्रिय और जितपरिषही होते हैं।

'आचारंग भाष्य' में चार बातें बताई गई हैं: बन्ध है, बन्ध का कारण है, बन्ध मुक्ति है, और बन्ध मुक्ति का कारण है। बन्ध पुण्य या पाप के रूप में होता है। जब ये पुण्य-पाप उदय में आते हैं, तब भाव पुण्य-पाप बनते हैं। बन्ध के रूप में ये द्रव्य पुण्य-पाप हैं। आश्रव को बंध का कारण बताया गया है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो कर्मों का कर्ता आश्रव ही होता है। दुःख से मुक्ति संभव है। मोक्ष का कारण संवर और निर्जरा है। जो प्रवचन करते हैं, वे दुःख मुक्ति का उपाय भी बताते हैं। प्रवचन देना भी सेवा का एक रूप है। आदमी के मन में चिन्तन से दुःख उत्पन्न हो सकता है, लेकिन यदि चिन्तन की धारा बदल जाए, तो दुःख मुक्ति संभव हो सकती है। अभाव पर ध्यान केंद्रित करने से व्यक्ति दुःखी हो सकता है, जबकि भाव को देखने से सुखी भी हो सकता है।

सही चिन्तन का होना आवश्यक है। सन्यास का मार्ग संवर और निर्जरा का मार्ग है, जो दुःख मुक्ति का मार्ग और उपाय है। मनुष्य को नकारात्मक चिन्तन से बचना चाहिए। (शेष पेज 18 पर)

अपरिग्रही और अनासक्त नहीं होते हैं प्रवृत्ति में लिप्त : आचार्यश्री महाश्रमण

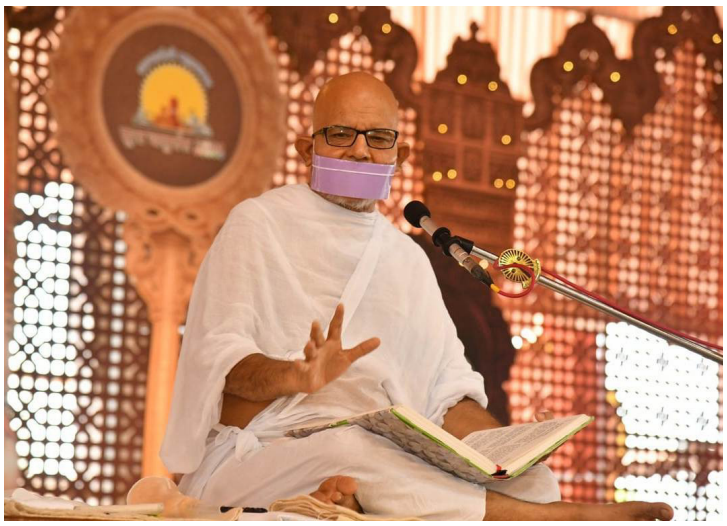

सूरत।
14 अक्टूबर, 2024

अध्यात्म के हिमालय आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'आयारो आगम' की विवेचना करते हुए कहा कि मनुष्य जीवन जीता है और जीवन जीने के लिए प्रवृत्ति भी करनी पड़ती है। कई अन्य कार्य भी होते हैं जिनके लिए चिंता हो सकती है, जैसे रोटी-पानी, कपड़ा, मकान आदि आवश्यकताएं। सामान्य व्यक्ति कभी-कभी इस स्थिति में पड़ सकता है कि वह शांति से कैसे जीए।

प्रवृत्ति के साथ कर्म का बंधन होता है। जो वीर अपरिग्रही और अनासक्त होता है, वह इन कर्म बंधनों से लिप्त नहीं होता। कर्म बंधन में कषाय का बड़ा योगदान होता है। कर्म के बंधन में कषाय और योग की भूमिका मानी गई है। प्रकृति और प्रदेश के बंध में योग की भूमिका होती है, जबकि स्थिति और अनुभाग के बंध में कषाय की भूमिका रहती है। बंधन दो प्रकार के होते हैं—साम्परायिक बंध और ऐर्यापथिक बंध। पहले से दसवें गुणस्थान तक साम्परायिक बंध होता है क्योंकि कषाय दसवें गुणस्थान तक होता है। 11वें, 12वें, और 13वें गुणस्थान में ऐर्यापथिक बंध होता है, जहां कषाय नहीं होता और न ही योग होता है।

जहां कषाय होता है, वहां साम्परायिक बंध होता है, और जहां सिर्फ योग होता है, वहां ऐर्यापथिक बंध होता है। ऐर्यापथिक बंध नाम मात्र का होता है, और यह केवल सातवेदनीय कर्म का बंध होता है। इसकी स्थिति भी केवल दो समय की होती है—बंधन और मोचन। सकषायता वाला बंध लम्बे समय तक बना रहता है। (शेष पेज 18 पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
21 अक्टूबर-27 अक्टूबर, 2024

संक्षिप्त खबर

रक्तदान शिविर मे 165 लोगों ने किया रक्तदान

सरदारपुरा। अभातेयुप के तत्वाधान में मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के तहत तेरापंथ युवक परिषद सरदारपुरा द्वारा आयोजित रक्तदान शिविर में 165 रक्तवीरों ने रक्तदान किया। तेयुप सरदारपुरा अध्यक्ष मिलन बाँठिया ने अपने विचार व्यक्त किए। रक्त दान शिविर सेठ भंवरलाल सुन्दर देवी कोठारी मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट के सहयोग से तेरापंथ भवन अमर नगर में आयोजित किया गया। रक्तदान शिविर संयोजक धीरज बेंगानी, जिनेन्द्र बोथरा, अनंत मेहता व रोहित जीरावला ने बताया कि शिविर में जोधपुर शहर विधायक अतुल भंसाली, लघु उद्योग भारती के राष्ट्रीय अध्यक्ष घनश्याम ओझा, पूर्व महापौर देवेन्द्र सालेचा, एसीपी ट्रैफिक रवीन्द्र बोथरा, नाकोड़ा तीर्थ ट्रस्टी राजेंद्र साँखला, एफ़आईआई से आदर्श शर्मा, मिसेज़ इंडिया इंटरनेशनल सिद्धि जौहरी, तेरापंथ सभा अध्यक्ष सुरेश जीरावला, सभा उपाध्यक्ष दिनेश कोठारी आदि की गरिमामयी उपस्थिति रही। इस शिविर में तेयुप द्वारा नेत्रदान जागरूकता का भी अभियान चलाया गया। नेत्रदान राष्ट्रीय प्रभारी कैलाश जैन ने बताया रक्तदान में आये रक्तवीर और अन्य कुल 180 व्यक्तियों ने मरणोपरांत नेत्रदान संकल्प पत्र भरे। तेयुप सरदारपुरा के मंत्री देवीचंद तातेड ने कैम्प में पधारे हुए सभी रक्तवीरों, प्रायोजक परिवार, ब्लड बैंक टीम आदि के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का कुशल मंच संचालन डॉ. प्रियंका बैद ने किया।

रक्तदान शिविर का आयोजन

उधना। तेरापंथ युवक परिषद् उधना द्वारा पांडेसरा में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में पूर्व विधायक विवेक भाई पटेल, पूर्व कॉरपोरेटर डी.एम.वानखेडे, बीजेपी सूरत महानगर संयोजक वीरेंद्र प्रताप सिंह, पांडेसरा पुलिस स्टेशन के पीएसआई अजीत सिंह बारिया ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। एडवोकेट धीरज आंचलिया के कार्यालय में आयोजित इस शिविर में MBDD उधना प्रभारी राकेश डांगी एवं सह प्रभारी मनोज डागा का सहयोग प्राप्त हुआ। शिविर में 30 यूनिट रक्त संग्रहित किया गया।

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टैक्ट 2024 का आयोजन

इचलकरंजी। अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी द्वारा निर्देशित अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2024 का आयोजन अणुव्रत समिति इचलकरंजी द्वारा किया गया। अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2024 के विषय 'व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण' के अंतर्गत चित्रकला, गायन, भाषण एवं निबंध की प्रतियोगिताएँ इचलकरंजी के 12 स्कूलों में आयोजित की गईं। 12 स्कूलों के कुल 1365 विद्यार्थियों ने इन प्रतियोगिताओं में भाग लिया। अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2024 को उत्साहपूर्ण एवं सफल संचालन में संयोजिका काजल छाजेड़ एवं सह संयोजिका लवीना छाजेड़ ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस प्रतियोगिता को सफल बनाने में अणुव्रत समिति के अध्यक्ष पंकज जैन, सचिव मधुसूदन मालपाणी, संगठन मंत्री संतोष भंसाली सहित सभी कार्यकारिणी सदस्यों और प्रत्येक सदस्य का विशेष योगदान रहा।

सेवा कार्य का आयोजन

लिलुआ। तेरापंथ युवक परिषद, लिलुआ और MCKV Alumni Association के संयुक्त तत्वावधान में सेवा कार्य का आयोजन बादामी देवी शारदा शिशु मंदिर, हावड़ा में किया गया। नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के पश्चात आश्रम के 30 बच्चों में वस्त्र वितरण किया गया। कार्यक्रम में तेयुप लिलुआ के मंत्री जयंत घोड़ावत, कार्यकारणी सदस्य अंकुश जैन, राहुल चोपड़ा, MCKV Alumni Association के अध्यक्ष रोशन सिंह और उनकी टीम ने अपनी सहभागिता दर्ज कराई।

मासखमण तपोभिनंदन समारोह का आयोजन

शाहदरा, दिल्ली।

मासखमण तपस्वी सरोज बोथरा का तपोभिनंदन समारोह ओसवाल भवन के प्रांगण में आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ पूर्वी दिल्ली महिला मंडल के सुमधुर गीत गायन के साथ हुआ।

साध्वी संगीतश्री जी ने कहा - तपस्या कर्म निर्जरा का महान साधन है। तपस्या वह संजीवनी है जिससे व्यक्ति अपनी आधि, व्याधि व उपाधि से ऊपर उठकर समाधिस्थ बन जाता है। तपस्या के द्वारा पुराने पाप कर्मों का क्षय होता है। साध्वी शांतिप्रभा जी, साध्वी कमलविभा जी एवं साध्वी मुदिताश्री जी ने तपस्वी बहन-भाईयों के तप की अनुमोदना की।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी के संदेश का वाचन सभा उपाध्यक्ष महावीर दुगड़ ने किया। दिल्ली सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया, अणुव्रत महासमिति के पूर्व अध्यक्ष अशोक संचेती, शाहदरा सभा के अध्यक्ष राजेन्द्र सिंघी, निवर्तमान अध्यक्ष पन्नालाल बैद, ओसवाल समाज के अध्यक्ष आनंद बुच्चा, गाजियाबाद सभा मंत्री रमेश बैंगाणी, पूर्वी दिल्ली महिला मंडल संयोजिका शिल्पा बाफना ने अपने विचार व्यक्त किए। रतनी देवी दुधोड़िया, संतोष सेठिया, अशोक बैद, बोथरा एवं बैद परिवार की बहनों आदि ने गीत एवं वक्तव्य से अनुमोदना की। शाहदरा सभा, पूर्वी दिल्ली महिला मंडल ने साहित्य व मोमेंटो से तपस्वियों का सम्मान किया। इस अवसर पर सोनिका जैन एवं दीपक जैन के तप की भी अनुमोदना की गई। कार्यक्रम का संचालन मंत्री सुरेश भंसाली ने किया।

रिश्तों को प्रगाढ़ बनाता है कृतज्ञता का भाव

रायपुर।

मुनि सुधाकर कुमार जी के सान्निध्य में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, रायपुर द्वारा विश्व कृतज्ञता दिवस के उपलक्ष्य में विशेष आयोजन किया गया। मुनिश्री ने कहा कि संसार में कृतज्ञता का अपना महत्व है।

भगवान महावीर ने प्राणीमात्र के साथ इस जगत के सभी तत्वों के प्रति कृतज्ञता अर्थात अप्रमाद संयम की भावना व्यक्त की। साथ ही भगवान ने श्रावक-श्राविकाओं से आह्वान किया कि वे अपने आप को कभी भी दीन-हीन नहीं समझे बल्कि जो मिला है उसमें आनंद पाने का प्रयास करें। हमें दूसरों के पास क्या है इसे देखते हुए दुःखी होने के बजाय यह देखना चाहिए कि हमारे पास क्या है।

मुनिश्री ने कहा कि तीन बातों में कृतज्ञता के प्रयोग से हम अपने जीवन का स्वकल्याण कर सकते हैं - स्वयं के प्रति कृतज्ञता, अपनेपन का एहसास, ईश्वर के प्रति कृतज्ञता। मुनिश्री ने आगे कहा कि पीछे का जिक्र और भविष्य की फिक्र हमें हमेशा परेशान करती है, हम वर्तमान में जीना सीखें।

मुनिश्री ने सकारात्मकता के विशेष प्रयोग करवाते हुए बताया कि इन प्रयोगों से हम अपने जीवन को सुखमय बना सकते हैं। मुनि नरेश कुमार जी ने सुमधुर गीतिका के संगान के साथ अपने विचार व्यक्त किए।

संस्कारशाला का प्रथम चरण का आयोजन

इचलकरंजी।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल इचलकरंजी द्धारा आयोजित समृद्ध राष्ट्र योजना कार्यशाला के अंतर्गत संस्कारशाला का प्रथम चरण साईं इंग्लिश स्कूल में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र और महाप्राण ध्वनि से हुई। कार्यसमिति सदस्या समता चौपड़ा ने महाप्राण ध्वनि का प्रयोग करवाया और उसका लाभ बताया।

अध्यक्ष शिल्पा बाफ़ना ने सबका स्वागत किया और बच्चों को कार्यशाला के विषय 'आलस्य नहीं समय का सदुपयोग करें' की जानकारी दी। मितल छाजेड ने बच्चों को समय का उपयोग कर जीवन में सफलता हासिल करने की प्रेरणा दी। समता चौपड़ा ने बच्चों को योग के प्रयोग करवाए।

अजंता सुराणा ने बच्चों को आलस्य मिटाने हेतु कुछ मुद्राएँ बतलाई। मंत्री मीना भंसाली ने आभार ज्ञापन किया। लगभग 120 बच्चों की उपस्थिति रही।

सेमिनार से पाया नेत्रदान संबंधी जिज्ञासाओं का समाधान

मुंबई (कांदिवली)।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् का मानवता को समर्पित एक अनोखा आयाम जो अंधेरी ज़िंदगी में उजाले की ज्योति प्रज्वलित करता है, वह है- नेत्रदान।

अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद् कांदिवली द्वारा आचार्य श्री भिक्षु के 222वें चरमोत्सव पर VISION FOR VISIONLESS सेमिनार तेरापंथ भवन कांदिवली में रखा गया। इस सेमिनार में रोटरी आई बैंक बोरिवली से कार्यकर्ताओं ने उपस्थिति दर्ज कराई। उपस्थित जान समूह को नेत्रदान के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की गई।

सेमिनार में अभातेयुप से नेत्रदान के राष्ट्रीय सहप्रभारी कमलेश भंसाली ने बताया कि नेत्रदान हेतु मृतक के पारिवारिक जन को संबल प्रदान करते हुए मानवता के इस महायज्ञ में मृतक के नेत्रों का दान देने के लिये प्रेरित करना है। उन्होनें बताया कि वे और उनकी पूरी टीम मानवता के इस उपक्रम में 24/7 उपलब्ध रहते हैं। सेमिनार में अभातेयुप से अमित रांका एवं मुम्बई से नेत्रदान प्रभारी मनीष धींग भी उपस्थित रहे।

सेमिनार में तेरापंथ युवक परिषद् कांदिवली द्वारा सभी को QR Code उपलब्ध कराया गया एवं तेयुप कांदिवली अध्यक्ष राकेश सिंघवी ने सभी से नेत्रदान हेतु रजिस्ट्रेशन की अपील की। तेयुप मंत्री पंकज कच्छारा ने सभी का आभार व्यक्त किया।

संथारा साधिका सरोज टांटिया

अमेरिका। संघ व संघपति के प्रति पूर्ण समर्पित उपासिका सरोज टांटिया ने मात्र 64 वर्ष की आयु में उच्च भावों से अमेरिका में संथारा स्वीकार कर आत्मकल्याण के पथ पर आगे बढी, कुल पर कलश चढाया। युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण की शिष्या समणी समत्वप्रज्ञा जी एवं समणी अभयप्रज्ञा जी ने उपासिका टांटिया को गुरू आज्ञा एवं परिवार की सहमति से 6 अक्तूबर 2024 अमेरिका के समय अनुसार दोपहर 1 बजकर 13 मिनट पर चौविहार संथारा का प्रत्याख्यान करवाया। टमकोर निवासी व बैंगलार तथा अमेरिका प्रवासी धनराज टांटिया की धर्मपत्नी सरोज स्व. दीपचन्द जीवणी देवी टांटिया की पुत्रवधु एवं स्व. रिद्धकरण लक्ष्मी देवी बैद की सुपुत्री थी। साध्वी शशिप्रभाजी आपकी संसारपक्षीय भाभी महाराज हैं जो फलसूंड में साध्वी सत्यवतीजी के साथ चातुर्मास कर रहे हैं। सरोज टांटिया तत्वज्ञ श्राविका थी एवं विजयनगर-बेंगलुरु महिला मंडल की संस्थापक अध्यक्षा भी रहीं। पति-पत्नी के सम्मिलित प्रयासों से 25 वर्षों तक ज्ञानशाला का सुचारू संचालन विजयनगर-बेंगलुरु स्थित आपके निवास में होता रहा। जब विजयनगर सभा भवन बना, तब वहां ज्ञानशाला के शुभारंभ के पश्चात प्रशिक्षिका के रूप में लगातार सेवाएं देती रहीं। 6 वर्ष पूर्व अकस्मात पता चला कि कैंसर की बीमारी लास्ट स्टेज में है, बैंगलोर में ईलाज से भी बीमारी पर काबू नहीं पाया जा सका तब पुत्र नीरज आपको अमेरिका ले आया। पुत्रवधु आशा भी चित्तसमाधि में सहायक रही। कुछ दिनों पूर्व तबियत बिगड़ती देख उन्होंने पूरी चैतन्य अवस्था में संलेखना प्रारम्भ कर दिया। चौविहार उपवास के पश्चात उच्च भावों के साथ चौविहार संथारा स्वीकार किया। आपका संथारा मंगलवार 8 अक्तूबर को दोपहर लगभग 11:50 बजे (भारतीय समयानुसार रात्रि 9:20 बजे) दृढ परिणामों के साथ सिद्ध हो गया।

सार-संभाल यात्रा

उत्तर कोलकाता। अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा, अभातेयुप साथी अनंत बागरेचा एवं जय चोरड़िया ने परिषद् की सार-संभाल हेतु पहुंचे। तेयुप उत्तर कोलकाता की टीम ने पिछले कार्यकाल एवं वर्तमान कार्यकाल की गतिविधियों को एक वीडियो के माध्यम से प्रस्तुत किया। अभातेयुप अध्यक्ष रमेश डागा ने परिषद् के कार्यों की सहारना करते हुए CPS कार्यशाला एवं ATDC खोलने की प्रेरणा दी। उत्तर कोलकाता सभा के अध्यक्ष विनोद बैद, मंत्री हेमराज संचेती, तेयुप अध्यक्ष मनीष जैन बरड़िया ने राष्ट्रीय अध्यक्ष का स्वागत करते हुए अपने विचार व्यक्त किए।

सेवा कार्य

साउथ कोलकाता। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तीनों आयामों सेवा-संस्कार-संगठन में कार्यरत तेरापंथ युवक परिषद् एवं तेरापंथ किशोर मंडल साउथ कोलकाता द्वारा लिलुआ स्थित स्कूल के 80 जरूरतमंद बच्चों को स्कूल बैग, पेंसिल बॉक्स आदि रोजमर्रा की सामग्री वितरित की गई। कार्यक्रम में पर्यवेक्षक आनंद मनोत, संयोजक नीलेश चिंडालिया, आदित्य पारख, मनीष सेठिया, अमित पुगलिया का विशेष सहयोग रहा। तेयुप साउथ कोलकाता एवं किशोर मंडल के 20 सदस्यों ने सेवा कार्य में सहभागिता दर्ज कराई। सेवा कार्य में सभा अध्यक्ष बिनोद चोरड़िया, महिला मंडल अध्यक्षा पदमा कोचर, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष नवीन दुगड़, एवं विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारी भी उपस्थित थे।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

■ **पूर्वांचल कोलकाता।** मोमासर निवासी पूर्वांचल कोलकाता प्रवासी, अभयराज - मंजू पटावरी के पुत्र-पुत्रवधु विक्रम - सोनम पटावरी के पुत्र का नामकरण जैन संस्कार विधि से उनके निवास स्थान में हुआ। जैन संस्कारक विजय बरमेचा एवं अनूप गंग ने नामकरण का कार्यक्रम संचालित किया।

■ **गंगाशहर।** मधु-जेठमल छाजेड़ की पौत्री, कुणाल-अंकिता छाजेड़ की नवजात पुत्रीरत्न का नामकरण संस्कार गंगाशहर में जैन संस्कार विधि से आयोजित हुआ। कार्यक्रम में जैन संस्कारक पवन छाजेड़ और देवेन्द्र डागा ने विधि विधान पूर्वक मांगलिक मंत्रोचार सहित नामकरण कार्यक्रम करवाया।

नवमनोनित टीपीएफ राष्ट्रीय अध्यक्ष का संस्थाओं ने किया अभिनंदन

विजयनगर।

साध्वी सिद्धप्रभा जी ठाणा- 4 के सान्निध्य में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में मनोनीत होने पर हिम्मत मांडोत का तेयुप विजयनगर एवं टीपीएफ़ बैंगलोर चैप्टर द्वारा अभिनंदन एवं सम्मान समारोह तेरापंथ सभा भवन विजयनगर बैंगलोर में आयोजित किया गया। साध्वी सिद्धप्रभा जी ने कहा कि सभी को मांडोत परिवार से प्रेरणा लेकर संयमी, तत्वज्ञ, सरल एवं संयुक्त परिवार के गुणों का विकास करना चाहिए।

साध्वी मलययशाजी, साध्वी आस्थाप्रभा जी, साध्वी दीक्षाप्रभाजी ने कार्यक्रम के उत्तरार्ध में गीतिका का संगान किया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वी श्री द्वारा नवकार मंत्र के मंगल मंत्रोच्चार से हुयी। तेयुप अध्यक्ष कमलेश चोपड़ा ने सभी का स्वागत करते हुए नवमनोनीत टीपीएफ के राष्ट्रीय अध्यक्ष मांडोत के आगामी कार्यकाल यशस्वी की मंगल कामना की। टीपीएफ बैंगलोर अध्यक्ष हितेश गिडिया ने सबका अभिनंदन करते हुए मांडोत के अनेक योगदानों का उल्लेख करते हुए शुभकामनाएं प्रेषित की। सभा अध्यक्ष मंगल कोचर, महिला मंडल उपाध्यक्ष सुमित्रा बरडिया, महासभा के पूर्व अध्यक्ष हीरालाल मालू, अणुविभा के राष्ट्रीय संगठन मंत्री राजेश चावत, सुरेश दक, राजस्थान मित्र मंडल अध्यक्ष महेंद्र टेबा, कर्नाटक स्थानकवासी संघ अध्यक्ष पुखराज मेहता, तेयुप पूर्व अध्यक्ष अमित दक, मांडोत परिवार से सुरेश मांडोत, टीपीएफ के पूर्व मुख्य ट्रस्टी एमसी बलडोटा, अरविंद मांडोत, शांतिलाल 'शांत', डॉ. प्रकाश छाजेड़ ने शुभकामनाएं प्रेषित की। अभातेयुप के वरिष्ठ उपाध्यक्ष पवन मांडोत ने अपने बड़े भाई को बधाई प्रेषित करते हुए उनकी विशेषताओं और संघ भक्ति का उल्लेख किया। टीपीएफ राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत मांडोत ने अपने वक्तव्य में तेरापंथ धर्म संघ को महान बताते हुए गुरु कृपा को विशेष बताया। टीपीएफ बैंगलोर और राष्ट्रीय स्तर पर संगठन के विस्तार, विकास और सक्रियता बढ़ाने का आह्वान किया। तेयुप विजयनगर द्वारा हिम्मत मांडोत का अभिनंदन पत्र द्वारा सम्मान किया गया।

अभिनंदन पत्र का वाचन निवर्तमान अध्यक्ष राकेश पोखरणा ने किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष मांडोत का परिचय दिव्या जैन ने दिया। विभिन्न संस्थाओं के वर्तमान एवं पूर्व पदाधिकारी, सदस्य एवं श्रावक-श्राविका समाज की उपस्थिति रही। आभार सहमंत्री पवन बैद द्वारा किया गया। संचालन तेयुप मंत्री संजय भटेवरा ने किया।

रक्तदान शिविर का आयोजन

फरीदाबाद। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वाधान में हरियाणा राज्य को सितंबर माह में रक्तदान शिविर लगाने का दायित्व मिला है उसी क्रम में तेयुप फरीदाबाद ने इंडिकेशन इंट्रूमेंट लिमिटेड, प्लॉट न. 19, सेक्टर-6 फरीदाबाद में छटा रक्तदान शिविर का आयोजन किया। इस रक्तदान शिविर में एमबीडीडी के संयोजक गौरव गोलछा तथा उनकी ऊर्जावान टीम की भागीदारी रही। तेयुप फरीदाबाद अध्यक्ष विनीत बैद, पंकज बांठिया, चंदर सेठिया, विवेक बैद, कुणाल गोलछा एवं तेयुप व किशोर मंडल के अन्य सदस्ययों ने रक्तदाताओं को व्यक्तिगत तौर पर रक्तदान के लिए प्रेरणा दी। रक्तदान शिविर में 28 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया।

मासखमण तप अभिनंदन का कार्यक्रम आयोजित

पाली।

मुनि सुमतिकुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में मासखमण तप अभिनंदन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुनिश्री ने कर्मवाद के सिदान्त को समझाते हुए कहा कि आत्मा के शुभ-अशुभ भावों से कर्म का बंधन होता है। हमारी आत्मा के शुभ भावों से सोने की बेड़ी एवं अशुभ भावों से लोहे की बेड़ी से आत्मा बंध जाती है। बेड़ी सोने की हो या लोहे की, है तो बन्धन ही। हमें अशुभ और शुभ में नहीं, शुद्ध भाव में जाना चाहिए, समता में रमण करना चाहिए। मुनिश्री ने भगवान महावीर के दृष्टांत के माध्यम से बताया कि आत्मा में बंधन का मूल कारण हमारे भाव हैं। हमें भावों में शुद्धता का विकास करना होगा और इसके लिए समता का विकास करना होगा, कषायों को शांत करना होगा। मुनिश्री ने चंचल बोहरा को 31 के प्रत्याख्यान करवाए। मुनि देवार्य कुमारजी ने कहा कि हिंसा के क्षेत्र में निमित्त भूत न बनें। अहिंसा और हिंसा के भेद हेतु हमारा विवेक जागृत होना चाहिए। तेरापंथ सभा के मंत्री प्रकाश कांकलिया ने साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी के संदेश वाचन किया। तेरापंथ महिला मंडल मंत्री सीमा मरलेचा ने बहिन चंचल बोहरा को आध्यत्मिक मंगलकामनाएं प्रेषित की। महिला मंडल की बहनों ने तप अनुमोदना गीतिका का संगान किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
21 अक्टूबर-27 अक्टूबर, 2024

आचार्य भिक्षु के 222वें चरमोत्सव पर विविध कार्यक्रम

शाहदरा, दिल्ली

साध्वी संगीतश्री जी के सान्निध्य में ओसवाल भवन में 222वां भिक्षु चरमोत्सव मनाया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ साध्वीश्री ने भिक्षु अष्टकम् से किया। साध्वी संगीतश्री जी ने कहा- तेरापंथ धर्म संघ के आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु सत्य के पुजारी थे, शौर्य, वीर्य, निर्भीकता के धनी थे। उन्होंने सत्य और साधना का जीवन जी कर धर्म का तेजस्वी रूप उजागर किया। आचार्य भिक्षु ने त्याग तप के द्वारा इस संघ की नींव को मजबूत बनाया। साध्वी शांतिप्रभा जी, साध्वी कमलविभा जी व साध्वी मुदिताश्री जी ने अपने उद्गार व्यक्त किये। ओसवाल सभा अध्यक्ष आनंद बुच्चा, दिल्ली सभा उपाध्यक्ष बाबूलाल दुगड़, गाजियाबाद सभा मंत्री रमेश बैंगाणी, पूर्वी दिल्ली महिला मंडल अध्यक्ष सरोज सिपानी, तेजकरण बैद, युवक परिषद अध्यक्ष राकेश बेंगानी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। स्थानीय महिला मंडल ने सुमधुर गीत प्रस्तुत किया। संजय भटेरा ने सुमधुर गीत के द्वारा आचार्य भिक्षु के प्रति श्रद्धाजंलि अर्पित की। कार्यक्रम का संचालन सभा अध्यक्ष राजेन्द्र सिंघी ने किया। इस अवसर पर रात्रिकालीन धम्म जागरण का भव्य कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। कार्यकम में गायक संजय भटेरा, मनोज नाहर, जयसिंह दुगड़, हनुमान नाहटा, अनुराग बोथरा, प्रियंका दुगड़, सुरभि भंसाली सुराणा, राजीव महनोत, पुलकित बरडिया, प्रेक्षा सुराणा, जिनी बैद, दिशा भंसाली, हंसराज श्यामसुखा, विशाल छलानी, करण सुखानी आदि अनेकों गायकों ने सुमधुर प्रस्तुति दी। मंच संचालन रितु सुराणा ने किया। 24 घंटे का अखंड जप भी भवन प्रांगण मे रखा गया।

गाँधीनगर, दिल्ली

अभातेयुप द्वारा निर्देशित 'अभ्यर्थना एक क्रांति की' उपक्रम के अंतर्गत तेयुप गाँधीनगर-दिल्ली द्वारा 'शासनश्री' साध्वी रविप्रभा जी के सान्निध्य में 'ॐ भिक्षु जय भिक्षु' का 24 घंटे का अखण्ड जप तेरापंथ भवन, कृष्णानगर, दिल्ली में आयोजित किया गया। इस अनुष्ठान में तेयुप गाँधीनगर-दिल्ली के परामर्शकगण, पदाधिकारीगण, युवा एवं किशोर कार्यकर्ताओं व कृष्णानगर क्षेत्र के श्रावक-श्राविका समाज के सहयोग से 161 की उपस्थिति के साथ कुल 257 सामायिक हुई।

कोलकाता

भिक्षु चरमोत्सव एवं अभातेयुप के 60 साल बेमिसाल के अवसर पर अभातेयुप निर्देशित तप-जप एवं भजनों का कार्यक्रम 'अभ्यर्थना - एक क्रान्ति की' भिक्षु धम्म जागरण का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद कोलकाता मेन द्वारा रिसड़ा में आयोजित किया गया। तेरापंथ मंडल के गुलाब बैद, बाबूलाल दुगड एवं उनकी टीम तथा भिक्षु भजन मण्डली के सुरेन्द्र, पवन बैद एवं टीम ने अपने भक्तिमय भजनों से माहौल को भिक्षुमय बना दिया। प्रीत बैद, पंकज दुधोडिया, निलेश कोचर, समर्थ रांका ने भी अपनी प्रस्तुति दी। कार्यक्रम के सफलतम आयोजन में नितिन बैद, सिद्धार्थ रांका, नमन सुराणा एवं पीयूष बैद का विशेष श्रम प्राप्त हुआ। कार्यक्रम में परिषद के विशेष सहयोगी मनोज सुराणा, समाजसेवी रेंवतमल रांका, परिषद पदाधिकारी, प्रबुद्धजनों, सदस्यों सहित अच्छी संख्या में श्रावक समाज उपस्थित था।

विद्याधर नगर, जयपुर

'शासन गौरव' बहुश्रुत साध्वी कनकश्रीजी के सान्निध्य में आचार्यश्री भिक्षु का 222वां चरमोत्सव मनाया गया। तेरापंथी सभा जयपुर के आयोजकत्व में तेरापंथी भवन में आयेजित कार्यक्रम की शुरूआत सूरत से समागत बेला बैद के मधुर संगान से हुई। 'शासन गौरव' साध्वीश्री ने धमर्सभा को संबोधित करते हुए कहा - आचार्यश्री भिक्षु भगवान महावीर की वाणी के सक्षम उद्गाता थे। उनकी सांस में आगम वाणी ध्वनित होती थी। वे धर्म क्रांति के पुरोधा थे। उनमें सत्य को सत्य व असत्य को असत्य कहने का प्रचंड साहस था। स्वामीजी के संघर्षों की कहानी व जीवन यात्रा के अंतिम क्षणों के रोमांचक प्रसंगों को बताते हुए साध्वीश्री ने कहा उन्होंने संघर्षों व विरोधों को पराक्रम व आत्मविश्वास की पुष्टि का हेतु माना।

साध्वीश्री ने आगे कहा - आचार्य श्री भिक्षु के परम्पर पट्टधर आचार्यश्री महाश्रमणजी के शब्द-शब्द व श्वास-श्वास में स्वामीजी की लोह लेखनी से अंकित मर्यादाएं व शिक्षाएं ध्वनित होती हैं। इसलिए आज भी धर्मसंघ उतना ही प्राणवान है। साध्वी मधुलताजी आदि साध्वियों ने शब्द चित्र व गीतिका के द्वारा स्वामीजी को श्रद्धा समार्पित की। साध्वी संस्कृतिप्रभाजी ने कविता द्वारा आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी। तेरापंथी सभा जयपुर के अध्यक्ष शांतिलाल गेलडा ने अपने विचार प्रस्तुत किए। युवा गायक सुनील लुणिया ने भिक्षु भक्ति गीत को मधुर स्वर दिया। कोलकता व बीकानेर से समागत रेखा गेलडा, प्रवीण बोथरा व सुशीला सेठिया ने भावपूर्ण गीत का संगान किया। कार्यक्रम का सफल संयोजन साध्वी मधुलेखाजी ने किया। भिक्षु चरमोत्सव के अवसर पर सैंकडों श्रावक-श्राविकाओं ने उपवास रखा, पूरे दिन भवन में गुरू मंत्र का अखण्ड जप चला। अनेक परिवारों ने ओम भिक्षु मंत्र का सवा लाख जाप किया। रात्रि में साध्वीश्री के सान्निध्य में 'जय भिक्षु संगीत मण्डली' द्वारा धम्मजागरण का कार्यक्रम हुआ। साध्वीवृंद व संगायकों द्वारा श्रद्धा भक्ति से ओतप्रोत गीतों से वातावरण भिक्षुमय बन गया।

पूर्वांचल-कोलकाता

अभातेयुप निर्देशित 'अभ्यर्थना - एक क्रांति की' के अंतर्गत आचार्य भिक्षु के 222वें भिक्षु चरमोत्सव एवं अभातेयुप के 60 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में धम्म जागरण 'एक शाम भिक्षु के नाम' का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद्, पूर्वांचल–कोलकाता द्वारा किया गया। परिषद की प्रसिद्ध पूर्वांचल स्वर लहरी भजन मंडली द्वारा इस कार्यक्रम में भिक्षु स्वामी के भजनों का सामूहिक रूप से संगान कर भावांजलि अर्पित की गई। कार्यक्रम में सभा के मंत्री पंकज डोशी, टीपीएफ अध्यक्ष विनोद दुगड़, महिला मंडल मंत्री बबिता तातेड, अभातेयुप सदस्य राजीव बोथरा, परामर्शक नोरतन बरमेचा सहित समस्त अवनी जैन परिवार एवं समाज के अनेक गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही। स्वर लहरी के सभी गायकों ने अपने मधुर गीतों से वातावरण को भक्तिमय बना दिया। इस आयोजन ने लगभग 200 से अधिक लोगों को भिक्षु स्वामी की महान शिक्षाओं और उनके जीवन से प्रेरणा लेने का अवसर प्रदान किया। इससे पूर्व तेयुप पूर्वांचल कोलकाता द्वारा 'ॐ भिक्षु जय भिक्षु' का 2 घण्टे का जप का आयोजन सुनील मालू, लेकटाउन के निवास स्थान में किया गया।

विजन फोर विजनलेस सेमिनार का आयोजन

दक्षिण मुंबई।

तेरापंथ युवक परिषद् दक्षिण मुंबई द्वारा 'विज़न फॉर विज़नलेस' नेत्रदान जागरूकता अभियान का कार्यक्रम मुनि कुलदीप कुमार जी के मंगलाचरण से प्रारंभ हुआ। महाबलेश्वर से पधारे मुख्य वक्ता एवं अतिथि दिव्यांग डॉ. भावेश भाटिया का परिचय सुरेंद्र मुनोत ने दिया। अतिथियों के सम्मान के पश्चात स्वागत भाषण में परिषद अध्यक्ष गिरीश सिसोदिया ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। सभा के मंत्री दिनेश धाकड़ ने 'कदम आगे बढ़ाना है' गीत की प्रस्तुति दी। मुख्य वक्ता डॉ. भावेश ने अपने जीवन के उतार-चढ़ाव एवं संघर्षों की कहानी का उदहारण देते हुए सभी को सफलता के उच्च आयाम पर पहुंचने की प्रेरणा दी। अभातेयुप के राष्ट्रीय सह प्रभारी कमलेश भंसाली ने नेत्रदान के बारे में जानकारी देते हुए लोगो के मन की भ्रांतियों को दूर किया। कार्यक्रम में प्रायोजक एम. के. हॉलमार्क सेंटर के शांतिलाल कोठारी का सहयोग रहा।

परेल आई बैंक से अर्चना और वर्षा ने नेत्रदान पर प्रोजेक्टर द्वारा विस्तृत जानकारी दी। कार्यक्रम के सफल आयोजन में आचार्य महाप्रज्ञ विद्यानिधि फाउंडेशन, श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ महिला मंडल, अणुव्रत उपसमिति, किशोर मंडल दक्षिण मुंबई का संपूर्ण सहयोग रहा। कार्यक्रम का सफल संचालन मंत्री श्रेयांश मुनोत ने किया।

आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष सोमिल निमजा ने किया। कार्यक्रम में संयोजक दर्शन डागलिया, सभा अध्यक्ष सुरेश डागलिया, संस्थाओं के पदाधिकारीगण एवं दक्षिण मुंबई श्रावक समाज कि अच्छी उपस्थिति रही।

मुरझाते रिश्तों को संभालने के लिए समय निकालें

रायपुर।

'रिश्तों की डोर ना हो कमजोर' कार्यशाला में पहुचें केन्द्रीय राज्यमंत्री व उपमुख्यमंत्री

श्री लाल गंगा पटवा भवन, टैगोर नगर में मुनि सुधाकरकुमार जी के सान्निध्य में 'रिश्तों की डोर, ना हो कमजोर' विषय पर भव्य सेमिनार का आयोजन तेरापंथ महिला मंडल, रायपुर के तत्वावधान में किया गया। मुनिश्री ने उपस्थित जनता को संबोधित करते हुए कहा आज छोटी-छोटी बातों पर तकरार और टकरार होने लगती है, जिससे सात फेरों का संबंध भी बंधन की जंजीर बनकर जीवन की बाधा बन जाता है। रिश्तों में प्रेम, सौहार्द, त्याग, प्यार का अभाव दिखने लगता है। आज तलाक की विकराल समस्या से संयुक्त परिवार और भारतीय आदर्श दांपत्य जीवन पर प्रश्न चिन्ह लग रहा है। भौतिकता की चकाचौंध में व्यक्ति मधुर रिश्ते का एहसास भूलता जा रहा है। पति-पत्नी के मध्य में अविश्वास, अहम, वहम एवं संदेह सात फेरों के संबंध को भी दुश्मनी में बदल देता है। 'मुझे तुम पर विश्वास है' - यह भाव एक दूसरे के प्रति रहना चाहिए।

मुनि श्री ने आगे कहा - दाम्पत्य जीवन की खुशहाली के लिए एक दूसरे को समय देना चाहिए। आज की भाग दौड़ भरी जिंदगी में व्यक्ति के पास रिश्तों को निभाने का समय नहीं है, जिससे रिश्ते मुरझाते जा रहे हैं। मुनि श्री ने उपस्थित सैंकड़ों दम्पत्तियों को कहा कि आपस में संवाद करें, विवाद नहीं। वार्तालाप करें, विलाप नहीं एवं एक दूसरे के प्रति कृतज्ञता और धन्यवाद का भाव रखें। मुनि नरेशकुमारजी ने कहा रिश्तों को मजबूत बनाने के लिए समन्वय, सामंजस्य, संतुलन एवं सहनशीलता के भाव का विकास जरूरी हैं। मुख्य अतिथि केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण राज्यमंत्री डॉ. एल. मुरुगन ने कहा रिश्तों के लिए कहना, सुनना, सहना एवं रहना सीखें। संबंधों से ही सफलता प्रकट होती है। एक दूजे के प्रति समर्पण का भाव रहना चाहिए। छत्तीसगढ़ के उपमुख्यमंत्री अरुण साव ने कहा कि संत समागम या संतसंग ही अपने आप में प्रेरणा का कार्य करता है। स्वागत स्वर अध्यक्षा नेहा जैन ने किया। जीतो लेडिज विंग की बहनों ने मंगलाचरण किया। कार्यक्रम में विशेष रूप से ललित पटवा उपस्थित थे।

खुशी बच्छावत ने कुशल संचालन करते हुए सबका धन्यवाद किया। इस अवसर पर रायपुर के अलावा छत्तीसगढ़ के अन्य स्थानों से भी श्रावक-श्राविका की सहभागिता रही। अन्य संघीय संस्थाओं के अनेकों प्रतिनिधि भी उपस्थित थे। सेमिनार में विषय के अनुरूप प्रेरणादायक भव्य नाटिका का मंचन भी किया गया।

अभातेयुप द्वारा निर्देशित मानवता को समर्पित महाअभियान VISION FOR VISIONLESS के अंतर्गत शाखा परिषदों द्वारा आयोजित विविध कार्यक्रम

उत्तर कोलकाता

कुसुम देवी सुंदरलाल दुगड़ जैन डेंटल कॉलेज एंड हॉस्पिटल में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेयुप उत्तर कोलकाता द्वारा नेत्रदान जागरुकता अभियान का आयोजन किया गया। एम.पी. बिरला आई क्लीनिक के रमेश कुमार सिंह ने आँखों की देखभाल और जागरूकता से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियाँ साझा की, जिससे लोगों को अपनी आँखों के प्रति सजग रहने की प्रेरणा मिली। उन्होंने बताया कि मृत्यु के बाद एक इंसान के नेत्रदान से 4 लोगों को रोशनी प्राप्त हो सकती है। तेरापंथ युवक परिषद के उपाध्यक्ष आदित्य संचेती ने परिषद के कार्यों और आयामों की जानकारी दी एवं डेंटल कॉलेज के प्रबंधन को स्थान उपलब्ध कराने के लिए धन्यवाद दिया। कार्यक्रम में तेयुप उत्तर कोलकाता के अध्यक्ष मनीष बरड़िया, मंत्री प्रदीप हीरावत, पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं के साथ लगभग 50 लोगों ने सहभागिता दर्ज करवाई। इसके अतिरिक्त द आर्यन्स स्कूल में आयोजित नेत्रदान जागरूकता शिविर में लगभग 60 लोगों ने भाग लिया। साथ ही आयोजित रक्तदान शिविर में कुल 56 यूनिट रक्त संग्रहित किया गया।

पूर्वांचल–कोलकाता

अभातेयुप के 60 बेमिसाल साल पूर्ण होने के उपलक्ष्य में नेत्रदान जागरूकता पखवाड़ा के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद पूर्वांचल कोलकाता ने तुलसी वाटिका से राधे पैलेस, लेक टाउन तक रैली का आयोजन किया। रैली में तेरापंथ सभा, पूर्वांचल, साल्टलेक, तेरापंथ महिला मंडल, पूर्वांचल एवं तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, पूर्वांचल का पूर्ण सहयोग रहा। रैली के माध्यम से कार्यकर्ताओं ने जनता को नेत्रदान के प्रति जागरूक किया एवं संकल्प पत्र भरवाए। परिषद अध्यक्ष नवीन सिंघी ने आभार ज्ञापन किया। रैली में लगभग 60 लोगों ने भाग लिया।

उधना

अभातेयुप के 60 साल बेमिसाल के उपलक्ष में Vision for Visionless उपक्रम के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद्, उधना ने क्लॉक गार्डन, भेस्तान में एक विशेष नेत्रदान जागरूकता रैली का सफलतापूर्वक आयोजन किया। रैली में लगभग 60 लोगों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और नेत्रदान हेतु प्रचार प्रसार किया। कार्यक्रम में तेयुप उधना के अध्यक्ष गौतम आंचलिया, पदाधिकारी, नेत्रदान प्रभारी महेंद्र जैन के साथ भेस्तान तेरापंथ श्रावक समाज एवं कार्यकर्ताओं की उपस्थिति रही।

राजाजीनगर

अभातेयुप निर्देशित VISION FOR VISIONLESS के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद् राजाजीनगर ने श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ राजाजीनगर द्वारा आयोजित गुरु अमर अमृत संयम महोत्सव के अवसर पर नेत्रदान जागरूकता अभियान का आयोजन किया गया। महोत्सव में पधारे सदस्यों से वार्तालाप करते हुए नेत्रदान कब, कौन, कैसे कर सकते हैं एवं नेत्रदान के पश्चात कैसे उन नेत्रों का उपयोग होता है इसकी विस्तृत जानकारी परिषद सदस्यों द्वारा प्रदान की गई। कार्यक्रम में लगभग 2000 से भी अधिक श्रावक-श्राविका समाज की उपस्थिति रही। इस अवसर पर भारतीय जनता पार्टी राज्य सभा सदस्य लहरसिंह सिरोहिया, विजयनगर क्षेत्र के विधायक कृष्णप्पा एवं अन्य संघीय संस्थाओं के पदाधिकारीगण ने तेयुप स्टाल पर पधारकर इस आयाम की खूब प्रशंसा की। इस अवसर पर श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा ट्रस्ट राजाजीनगर अध्यक्ष अशोक चौधरी, पूर्व अध्यक्ष रोशनलाल कोठारी, तेयुप अध्यक्ष कमलेश चौरड़िया, पदाधिकारी, युवा एवं किशोर कार्यकर्ताओं ने अपनी सहभागिता दर्ज कराई।

बैंगलौर शहर के प्रसिद्ध लालबाग बोटनिकल पार्क में प्रातः भ्रमण हेतु आई जनता को के बीच नेत्रदान जागरूकता अभियान का आयोजन किया गया।

शहर के शेषाद्रीपुरम स्थित नेहरूनगर दि कर्नाटका वेलफेयर एसोसियन फॉर ब्लाइंड के सहयोग से नेत्रदान जागरूकता अभियान की रैली का आयोजन किया गया।

पाली

तेरापंथ युवक परिषद् पाली द्वारा अणुव्रत नगर में जैन युवा संगठन द्वारा आयोजित जैन स्नेह मिलन कार्यक्रम में नेत्रदान जागरूकता अभियान का आयोजन अणुव्रत समिति के साथ संयुक्त रूप से किया। कार्यक्रम में उपस्थित प्रशासन के कर्मचारियों के साथ 53 लोगों ने नेत्रदान का संकल्प लिया। उपस्थित सदस्यों को नेत्रदान एवं नेत्रदान के पश्चात नेत्रों के उपयोग की विस्तृत जानकारी परिषद सदस्यों द्वारा प्रदान की गई। इस अवसर पर उपस्थित पाली जिलाधीश, प्रशासनिक अधिकारियों एवं सामजिक संगठनों ने तेयुप के इस आयाम की खूब सराहना की। इस अवसर पर नेत्रदान राज्य प्रभारी रोशन नाहर, तेयुप अध्यक्ष विपिन बांठिया, तेयुप सहमंत्री अरिहंत सुन्देचा, प्रभारी हंसमुख बांठिया, अणुव्रत समिति अध्यक्ष सुबुद्धि समदड़िया, सुरेंद्र दुगड़, दिनेश बांठिया आदि ने नेत्रदान जागरूकता महाअभियान में अपनी सहभागिता दर्ज कराई।

अमराईवाड़ी

अभातेयुप के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद, अमराईवाड़ी द्वारा राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा की अध्यक्षता में नेत्रदान जागरूकता अभियान 'Vision for Visionless' के अंतर्गत वृहद् रैली का आयोजन हर भोलेनाथ सोसाइटी से सिंघवी भवन तक किया गया। इस रैली का शुभारंभ राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा ने किया। रैली में शाखा प्रभारी कुलदीप नवलखा, अभातेयुप सदस्यों की भी उपस्थिति रही। रैली के माध्यम से समाज में मरणोपरांत नेत्रदान के लिये जारूगकता के साथ-साथ शपथ पत्र भी भरवाये गये। कार्यक्रम में तेयुप अमराईवाड़ी ओढव के अध्यक्ष मुकेश सिंघवी, सभा अध्यक्ष नवरत्न चिप्पड़, महिला मंडल अध्यक्षा लक्ष्मी सिसोदिया के साथ अमराईवाड़ी ओढव की संपूर्ण युवाशक्ति एवं श्रावक समाज की उपस्थिति रही।

साउथ हावड़ा

अभातेयुप के 60 साल बेमिसाल पूर्ण होने के उपलक्ष्य में निर्देशित नेत्रदान जागरूकता पखवाड़ा में तेरापंथ युवक परिषद् साउथ हावड़ा द्वारा नेत्रदान जागरूकता रैली का आयोजन किया गया। जागरूकता रैली में अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा, महामंत्री अमित नाहटा, अभातेयुप कार्यसमिति सदस्यगण, समिति सदस्यगण, संस्थापक अध्यक्ष राजेश दुगड़, तेरापंथ युवक परिषद साउथ हावड़ा के अध्यक्ष गगन दीप बैद, संपूर्ण प्रबंध मंडल, कार्यसमिति सदस्यगण, युवा साथी, किशोर मंडल, साउथ हावड़ा श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, महिला मंडल, कन्या मंडल सहित श्रावक समाज की अच्छी उपस्थिति रही। रैली विवेक विहार जीटी रोड से प्रारंभ होकर प्रेक्षा विहार प्रांगण में पहुंची। रैली का मुख्य उद्देश्य नेत्र दान के प्रति लोगों को जागरूक करना था।

बेंगलुरु

तेरापंथ युवक परिषद बेंगलुरु गांधीनगर द्वारा 60 साल बेमिसाल के अंतर्गत Vision for Visionless नेत्रदान जागरूकता अभियान के तहत विभिन्न कार्यक्रमों का सफल आयोजन किया गया। इस अवसर पर कर्नाटक सरकार के स्वास्थ्य मंत्री दिनेश गुंडूराव ने नेत्रदान पर अपना संदेश देते हुए समाज से नेत्रदान हेतु संकल्पित होने की अपील की। उन्होंने इस अभियान की सराहना करते हुए कहा कि नेत्रदान एक महान सेवा है, जो नेत्रहीनों के जीवन में प्रकाश लाने का कार्य करती है।

दूसरे कार्यक्रम में IDL फाउंडेशन और IDL ब्लाइंड बैंड, मथिकेरे, बेंगलुरु के 15 नेत्रहीन बच्चों ने अपने संघर्ष और अनुभवों को साझा किया। उनकी मार्मिक कहानियों ने उपस्थित लोगों को गहराई से प्रभावित किया और समाज में समान अधिकारों और अवसरों की आवश्यकता पर ध्यान आकर्षित किया।

आचार्य महाप्रज्ञ हाई स्कूल की प्रधानाध्यापिका पार्वती ने नेत्रदान के महत्व पर अपने विचार साझा किए। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि एक नेत्रदान से दो व्यक्तियों की दृष्टि बहाल की जा सकती है, जो उनके जीवन को फिर से रोशन कर सकती है। आचार्य महाप्रज्ञ हाई स्कूल के लगभग 200 विद्यार्थियों और शिक्षकों ने नेत्रदान जागरूकता के प्रति समाज को प्रेरित करने के लिए एक रैली और सम्मेलन में भाग लिया।

मलेश्वरम स्थित डॉ. सोलंकी हॉस्पिटल में आयोजित अन्य कार्यक्रम में डॉ. नरपत सोलंकी ने दृष्टिहीनों के जीवन में सुधार लाने के लिए अपने चिकित्सा अनुभव और विशेषज्ञता को साझा किया। उन्होंने नेत्रदान के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इससे न केवल दृष्टिहीन व्यक्तियों को नई दृष्टि प्राप्त होती है, बल्कि समाज में सेवा और सहयोग का भाव भी प्रबल होता है।

कार्यक्रम में प्रायोजक हस्तीमल दिनेश राजेश हिरण (आमेट, बेंगलुरु) का विशेष योगदान रहा। तेरापंथ युवक परिषद बेंगलुरु के अध्यक्ष विमल धारीवाल, उपाध्यक्ष प्रसन्न धोका, मनीष भंसाली, मंत्री राकेश चोरड़िया, सहमंत्री अंकित छाजेड़, संगठन मंत्री मोहित डूंगरवाल, नेत्रदान राज्य प्रभारी मोहित सुराणा, सह संयोजक हितेश चोपड़ा और पूर्व अध्यक्ष प्रदीप चोपड़ा एवं कार्यसमिति सदस्य उपस्थित थे।

राजराजेश्वरीनगर

तेरापंथ युवक परिषद् राजराजेश्वरीनगर द्वारा नेत्रदान जागरुकता अभियान 'विजन फॉर विजनलेस' के अंतर्गत विशाल रैली का आयोजन तेरापंथ भवन आर. आर. नगर से एटीडीसी तक किया गया। रैली का शुभारंभ डॉ. प्रकाश जैन द्वारा किया गया। उन्होंने सभी को नेत्रदान के बारे में जानकारी दी। युवकों ने रैली में नेत्रदान के पोस्टर एवं बैनर के माध्यम से लोगों को जागरूक किया। इस अवसर पर तेयुप अध्यक्ष बिकाश छाजेड़, सभा अध्यक्ष राकेश छाजेड़, ट्रस्ट अध्यक्ष मनोज डागा, महिला मंडल मंत्री पद्मा मेहर, ज्ञानशाला संयोजिका प्रिया छाजेड़, तेयुप पदाधिकारीगण, कार्यसमिति सदस्य एवं श्रावक समाज उपस्थित थे। आभार ज्ञापन मंत्री सुपार्श्व पटावरी ने किया।

नालासोपारा, मुंबई

अभातेयुप के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद् नालासोपारा द्वारा नेत्रदान जागरुकता और संकल्प के लिए बाइक रैली का सुंदर आयोजन किया गया। रैली की शुरुआत नमस्कार महामंत्र एवं मंगल पाठ से की गई जो आचोले तलाब से शुरू होकर तेरापंथ सभा भवन तुलिंज रोड पर संपन्न हुई।

सभी ने नेत्रदान के जोर-शोर से नारे लगाए। तेयुप अध्यक्ष मनोज सोलंकी ने नेत्रदान के बारे में विस्तृत जानकारी दी। नेत्र प्रभारी किशन कोठारी ने अपने विचार रखे। रैली में सभा अध्यक्ष चंद्रप्रकाश धाकड़, पदाधिकारी, कार्यकर्ताओं एवं किशोर मंडल आदि की सराहनीय उपस्थिति रही।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
21 अक्टूबर-27 अक्टूबर, 2024

संक्षिप्त खबर

तेरापंथी ज्ञानशाला प्रशिक्षक परीक्षा का आयोजन

सिकंदराबाद। तेरापंथ महासभा ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के तत्वावधान में नगरत्रय में चलने वाली 21 ज्ञानशालाओं की 22 प्रशिक्षिकाओं ने संचालक संस्था श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के अन्तर्गत अपनी परीक्षाएं लिखी। प्रशिक्षिकाओं के त्रिवर्षीय कोर्स में इस बार विज्ञ व स्नातक की परीक्षा हुई। क्षेत्रीय संयोजक संगीता गोलछा, मुख्य प्रशिक्षक पुष्पा बरड़िया व परीक्षा व्यवस्थापक सरिता नखत, सह व्यवस्थापक जूली बैद की देख-रेख में तेरापंथ भवन, डी. वी. कॉलोनी में परीक्षा का सफल आयोजन हुआ। यहां विराजित 'शासनश्री' साध्वी शिवमाला जी आदि ठाणा 4 से मंगलपाठ श्रवण के बाद केन्द्र से प्राप्त प्रश्नपत्र सभा अध्यक्ष सुशील संचेती, ज्ञानशाला परामर्शक अंजू बैद एवं अन्य संस्थाओं के पदाधिकारियों की उपस्थिति में खोले गए। परीक्षा सम्बन्धी सभी व्यवस्थाओं को सुचारू करने में क्षेत्रीय सह संयोजक यशोदा कोठारी व उषा सुराना का विशेष सहयोग रहा।

सास-बहु कार्यशाला का आयोजन

साउथ हावड़ा। मुनि जिनेशकुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में तेरापंथ महिला मंडल द्वारा प्रेक्षा विहार में 'सुखी सास-बहू: सुखी घर-परिवार' विषय पर कार्यशाला का आयोजन हुआ। मुनि जिनेशकुमार जी ने कहा कि सास-बहू को रिश्तों का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए ताकि परिवार में सुख-शांति स्थापित हो सके। मुनिश्री ने बताया कि सास-बहू का रिश्ता साझेदारी का है, और सामंजस्य से घर में शांति रहती है। सास-बहू का तालमेल जीवन को सरल बनाता है, जबकि भेद जीवन को कठिन बना देता है। मुनि श्री ने आगे कहा- सास और बहु में तालमेल है तो जीवन एक खेल है, अगर दिल में भेद है तो जीवन एक जेल है। सामंजस्य के अभाव में नया चूल्हा होने में देर नहीं होती। एक दूसरे को सम्मान दें, एक दूसरे के भावों में समझें, सेवा-सहयोग का भाव रखे। रहने, सहने और कहने का विवेक जागृत हो जाए तो घर परिवार में शांति का साम्राज्य स्थापित हो जायेगा। मुनि परमानंद जी ने कहा कि रिश्तों में दरार नहीं आनी चाहिए और एक-दूसरे के हितों की रक्षा करनी चाहिए। महिला मंडल की बहनों ने सुंदर परिसंवाद प्रस्तुत किया। मुनि कुणाल कुमार जी ने गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंदजी ने किया, और आभार ज्ञापन शीला नाहटा ने दिया।

बाइक रैली का आयोजन

हासन। तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में नेत्रदान जागरूकता एवं रक्तदान शिविर का कार्यक्रम रखा गया। नेत्रदान अभियान हेतु बाइक रैली का प्रारंभ तेरापंथ सभा भवन से हुआ जो विभिन्न मार्गों से होते हुए पुनः तेरापंथ सभा भवन पहुंची। कार्यक्रम के विशेष अतिथि नेत्र विशेषज्ञ डॉ. शिवप्रसाद ने कहा कि एक आदमी के नेत्र दान से चार लोगों की जिंदगी से अंधेरा दूर होता है। कर्नाटक बी.जे.पी. के प्रधान कार्यदर्शी प्रीतम जे. गौड़ा ने कहा रक्त दान जीवन दान के समान है। हासन बी.जे.पी. युवा मोर्चा के अध्यक्ष पुनीत कुमार ने नेत्र दान पर अपने विचार व्यक्त किए। तेरापंथ युवक परिषद, हासन एवं बी.जे.पी. युवा मोर्चा के संयुक्त अभियान के तहत रक्तदान कार्यक्रम हुआ। शिविर में 45 यूनिट रक्त का संचय हुआ। 100 लोगों ने नेत्र दान का संकल्प लिया। कार्यक्रम में हासन तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सोहनलाल तातेड, अभूतपूर्व अध्यक्ष डॉ. जयंतीलाल कोठारी, महावीर भंसाली, अणुव्रत समिति अध्यक्ष चांदमल सुराणा, मूर्तिपूजक समाज के अध्यक्ष अमृतलाल भंडारी, युवक परिषद अध्यक्ष नितेश सुराणा, मंत्री मनीष तातेड, हासन नेत्र दान प्रभारी दिनेश सेठिया ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन जयंत गुलगुलिया ने किया।

अष्टदिवसीय प्रेक्षाध्यान साधना शिविर

आत्मशक्ति के उद्घाटन का सशक्त माध्यम है प्रेक्षाध्यान शिविर

मुंबई (कांदिवली)।

साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य एवं निर्देशन में अष्ट दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर तेरापंथ भवन में आयोजित हुआ। इस अवसर पर साध्वीश्री ने कहा- प्रेक्षाध्यान अन्तर्यात्रा करने में सबल सहायक है। अतीत की चिन्ता से मुक्त रहना, भविष्य की अनावश्यक कल्पना न करना ओर वर्तमान समय को जागरुकता के साथ व्यतीत करना ही प्रेक्षाध्यान है।

वर्तमान में घटित होने वाली हर घटना को ज्ञाता, द्रष्टा भाव से देखना ही ध्यान है। जब व्यक्ति घटनाओं के साथ जुड़ता है समस्याएं पैदा होती है। प्रेक्षाध्यान समस्याओं का समाधायक है। प्रेक्षाध्यान शांति ओर आनन्द का साम्राज्य प्रदाता है। आत्मशक्ति के उद्घाटन का सशक्त माध्यम प्रेक्षाध्यान है।

प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष का यह प्रथम शिविर और मुंबई में प्रथम अष्ट दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का उद्घाटन सत्र का प्रारंभ प्रेक्षा प्रशिक्षक-प्रशिक्षिकाओं के द्वारा प्रेक्षा-गीत संगान से हुआ। श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउण्डेशन के अध्यक्ष मेघराज धाकड़ ने मंचासीन महानुभावों एवं शिविरार्थियों का स्वागत करते हुए कहा- यह शिविर कांदिवली, राजभवन में आयोजित हो रहा है, इसकी हार्दिक प्रसन्नता है। साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी के दिशा निर्देशन में आयोजित यह शिविर सबके लिए फलदायी बनेगा, ऐसा मुझे विश्वास है। मुंबई तेरापंथ सभा के अध्यक्ष माणक धींग ने कहा- इस प्रकार के व्यक्तित्व विकास के उपक्रम से परिवार, समाज में अपेक्षित बदलाव लाया जा सकता है। वरिष्ठ प्रेक्षा प्रशिक्षक पारस दुगड़ ने श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउण्डेशन के अध्यक्ष मेघराज धाकड़ का परिचय प्रस्तुत किया, प्रेक्षा प्रशिक्षिका मीना जैन ने स्वागत स्वर प्रस्तुत किए।

साध्वी डॉ. राजुलप्रभाजी ने कहा- प्रेक्षाध्यान से इन्द्रिय संयम की चेतना का विकास संभव है। प्रेक्षाध्यान पदार्थ, इन्द्रिय और शरीर से हटकर आत्मानन्द की साधना का अवसर है।

प्रेक्षाध्यान अकादमी के विभागाध्यक्ष अशोक चिन्डालिया ने अपने विचार व्यक्त किए। उद्घाटन सत्र के अवसर पर साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी द्वारा शिविरार्थियों कों उपसम्पदा-सूत्रों से दीक्षित किया गया।

कार्यक्रम का संचालन साध्वी डॉ. शौर्यप्रभा जी ने किया।

भौतिक सुखों को छोड़े बिना ध्यान साधना असंभव

सिरियारी।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण द्वारा घोषित प्रेक्षा कल्याण वर्ष के अन्तर्गत भिक्षु समाधि स्थल संस्थान, सिरियारी में अष्ट दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन मुनि मणिलालजी के सान्निध्य एवं मुनि धर्मेशकुमारजी के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। शिविर के उद्घाटन में प्रेक्षागीत का संगान किया गया।

मुनि मणिलालजी ने उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए कहा- प्रेक्षाध्यान स्वयं के द्वारा स्वयं को देखने की प्रक्रिया है। वैसे तो हर क्रिया के साथ ध्यान को जोड़ना चाहिए किन्तु यह तब संभव है जब व्यक्ति भौतिक सुखों का आकर्षण छोड़ने का प्रयास करेगा। अहंकार और ममकार से मुक्त रहकर ही व्यक्ति ध्यान में प्रवेश कर सकेगा। अतः व्यक्ति इस शिविर के माध्यम से ध्यान के द्वारा स्वयं को स्वयं से जोड़ने का प्रयास करें।

मुनि धर्मेशकुमारजी ने शिविर की महत्ता को प्रकट करते हुए कहा- प्रत्येक शिविरार्थी प्रत्येक क्रिया के साथ भाव क्रिया करने का प्रयास करे। प्रतिक्रिया विरति, मैत्रीभाव, मितभाषण के साथ स्वयं को जोड़ने के साथ ध्यान के प्रयोग करें। स्वयं को बदलने की प्रक्रिया का नाम है- प्रेक्षाध्यान। अतः इस दिशा में स्वयं को अग्रसर करें तथा ध्यान को साथ जोड़कर आगे बढ़े। मुनि चैतन्यकुमार जी 'अमन' ने अपने संबोधन में कहा प्रत्येक व्यक्ति शान्ति और आनंद का जीवन जीना चाहता है। उसके लिए आवश्यक है- वितैषणा, लोकैषणा और पुत्रैषणा जैसी भावना से मुक्त रहकर आत्मतत्व की दिशा में अग्रसर हो। कामनाओं को छोड़े बिना आत्मशान्ति को पाना संभव नहीं। प्रेक्षाध्यान के प्रयोगों से कामनाओं से मुक्त बना जा सकता है।

प्रेक्षाध्यान गीत के संगान से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। इस अवसर पर संस्थान के उपाध्यक्ष उत्तमचंद सुखलेचा ने शिविरार्थियों का स्वागत किया। प्रेक्षा प्रशिक्षक मिश्रीमल जैन, प्रशिक्षिका रणजीता जैन, स्वास्तिक जैन ने विचार प्रकट किए। विकास बरड़िया ने आभार प्रकट किया।

बारह व्रत कार्यशाला का आयोजन

गंगाशहर। अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद् गंगाशहर द्वार बारह व्रत कार्यशाला का आयोजन शांतिनिकेतन सेवा केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी चरितार्थप्रभाजी एवं साध्वी प्रांजलप्रभाजी के सान्निध्य में किया गया।

साध्वी चरितार्थप्रभाजी ने अपने वक्तव्य से सभी को 12 व्रतों के पालन की प्रेरणा दी। मुख्य वक्ता उपासक श्रेणी के राष्ट्रीय संयोजक सूर्यप्रकाश सामसुखा ने उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं को बारह व्रत की सम्पूर्ण जानकारी प्रदान की एवं उनकी महत्ता के बारे में बताया।

तेरापंथ महासभा के संरक्षक जैन लूणकरण छाजेड़ ने गंगाशहर सभा द्वारा संपन्न हुई 'गुरुदेव अरदास यात्रा' की विस्तृत जानकारी दी। इस यात्रा में तेरापंथ सभा, तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ महिला मंडल के कार्यकर्ताओं ने अपना पूर्ण सहयोग दिया।

कार्यक्रम के अंत में तेरापंथ युवक परिषद्, सभा, महिला मंडल के पदाधिकारीयों द्वारा मुख्य वक्ता का सम्मान किया गया। आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष प्रथम ललित राखेचा व मंच का कुशल संचालन संगठन मंत्री रोहित बैद द्वारा किया गया।

व्यक्तित्व विकास कार्यशाला 'दायित्व के दर्पण में युवाशक्ति' का आयोजन

अमराईवाडी ओढ़व, अहमदाबाद।

तेयुप अमराईवाडी ओढ़व द्वारा साध्वी काव्यलताजी के सान्निध्य में अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा की अध्यक्षता में व्यक्तित्व विकास कार्यशाला 'दायित्व के दर्पण में युवाशक्ति' का भव्य आयोजन सिंघवी भवन, अमराईवाडी-ओढ़व, अहमदाबाद में हुआ। साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र से कार्यशाला की शुभ शुरुआत हुई। युवकों ने विजय गीत का संगान किया।

श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा ने किया। अपने स्वागत वक्तव्य में तेयुप अध्यक्ष मुकेश सिंघवी ने इस कार्यकाल में हुई विभिन्न कार्यों की जानकारी देते हुए अभातेयुप के हर आयाम को श्रेष्ठता के साथ करने की कटिबद्धता को दोहराया।

साध्वी काव्यलता जी ने अपने उद्बोधन में कहा - युवकों को कार्य को छोटे-बड़े के तराजू में तोले बिना कार्य करना है। जो भी कार्य हो उसको लगन से करते हुए कर्तव्य का पालन करना चाहिए। आपने पूर्व में कई युवकों द्वारा संघ भक्ति के उदाहरणों को विस्तार पूर्वक बताते हुए सबको प्रेरित किया। साध्वी वृंद ने कार्यशाला के विषय पर निर्मित सुमधुर गीत की प्रस्तुति दी।

राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा ने अपने वक्तव्य में युवाओं को आचार्य प्रवर के आगामी 2025 के अहमदाबाद चातुर्मास के लिए समर्पित होकर कार्य करने की प्रेरणा दी और साथ ही बताया कि ऐसा अवसर जीवन में बार-बार नहीं आता, इसका पूर्णतया लाभ लेते हुए गुरुभक्ति की गंगा में हर युवक को डुबकी लगानी है। अभातेयुप प्रबुद्ध विचारक मुकेश गुगलिया ने भी अपनी भावना व्यक्त की।

तेयुप अमराईवाडी ओढ़व के शाखा प्रभारी कुलदीप नवलखा ने परिषद के युवकों की संघ-संघपति के प्रति निष्ठा की तारीफ करते हुए निरंतर ऐसे ही कार्य करने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम में उपासक एवं जैन संस्कार विधि के मुख्य प्रशिक्षक डालिमचंद नौलखा, तेयुप चेन्नई अध्यक्ष एवं अभातेयुप साथी संदीप मुथा, तेयुप अमराईवाडी ओढ़व के पदाधिकारी गण, अभातेयुप परिवार के साथी गण, तेरापंथ सभा, महिला मंडल, तेयुप अहमदाबाद के अध्यक्ष पंकज घीया एवं पदाधिकारीगण, अहमदाबाद की विभिन्न सभा संस्थाओं के पदाधिकारी गण, युवाशक्ति एवं संभागियों की गरिमामय उपस्थिति रही।

कार्यशाला का कुशल संचालन विपुल मांडोत एवं आभार ज्ञापन मंत्री सुनील चिप्पड़ ने किया।

नीदरलैंड में अष्ट दिवसीय प्रवास

नीदरलैंड।

पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी की अनुकम्पा से समणी मलयप्रज्ञाजी और समणी नीतिप्रज्ञाजी का नीदरलैंड में पदार्पण हुआ। 8 दिवसीय प्रवास में नीदरलैंड के आठ शहरों में प्रवास रहाः यूथॉर्न, अम्स्टेलवीन, डेन हाग, वूरबर्ग, अल्फेन आन डेन रिजन, आइंडहोवेन, अल्मेरे और यूट्रेक्ट। प्रतिदिन सुबह प्रवचन, दोपहर की सेवा और शाम को ज्ञान चर्चा होती थी। बच्चों के लिए समानांतर कक्षाएं भी संचालित की गई, जिनका समापन बच्चों द्वारा सीखी गई बातों पर एक संक्षिप्त प्रस्तुति के साथ हुआ। जर्मनी और बेल्जियम के परिवार विशेष रूप से प्रवचन और सेवा में भाग लेने के लिए नीदरलैंड आए। समणी द्वय के सान्निध्य में पहली बार नीदरलैंड में जैन सामूहिक क्षमावाणी कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें जैन धर्म के सभी संप्रदायों से लगभग 150 श्रावक श्राविकाएं उपस्थित थे। समणी जी को हिंदू स्वयंसेवक संघ, नीदरलैंड द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में भी आमंत्रित किया गया था। समणीजी के व्याख्यान में हिंद समुदाय के लोग भी शामिल हुए।

मर्यादा, अनुशासन एवं संगठन हैं तेरापंथ के प्राण तत्त्व

मण्डिया। महासभा के अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया, कार्यकारिणी सदस्य संजय बाठिया एवं प्रकाशजी लोढा संगठन यात्रा के अंतर्गत मण्डिया पधारे। सभा के अध्यक्ष सुरेश भंसाली ने स्वागत किया। साध्वी संयमलताजी ने श्रावकों को सम्बोधित करते हुए कहा तेरापंथ एक प्राणवान एवं शक्तिशाली धर्मसंघ है। जहां मर्यादा, अनुशासन एवं संगठन इसके प्राण तत्त्व हैं। तेरापंथ की अनेक संस्थाओं में संस्था शिरोमणि तेरापंथ महासभा है। मनसुखलाल सेठिया केवल कार्यकर्ता नहीं बल्कि एक श्रावक कार्यकर्त्ता हैं, श्रमणोपासक हैं और आध्यात्मिक जीवन जीने वाले हैं। इनका पूरा जीवन गुरुदेव के इंगित के प्रति समर्पित है। हम सभी गुरुदेव के प्रति पूर्ण समर्पित होकर इस धर्मसंघ को और तेजस्वी, यशस्वी बनाते रहें।

साध्वी मार्दवश्रीजी ने कहा- आवश्यकता आविष्कार की जननी होती है, हमारे आठवें आचार्य कालूगणी की आवश्यकता ने महासभा का आविष्कार किया। तेरापंथ महासभा धर्मसंघ को तेजस्वी बनाने में योगभूत बन रही है। महासभा अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया ने संगठन को मजबूत बनाने, संघीय कार्यों में सहभागिता हेतु आह्वान करते हुए तेरापंथ महासभा की योजनाओं को प्रस्तुत किया। श्रावकों ने अपनी जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त किया।

बदलें सोच, बदलेंगे सितारे

रायपुर।

मुनि सुधाकर जी के सान्निध्य में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, रायपुर द्वारा विशेष कार्यशाला 'बदलें सोच, बदलेंगे सितारे' का आयोजन किया गया। उपस्थित जनमेदिनी को संबोधित करते हुए मुनि सुधाकर जी ने कहा कि हमारे मन की मनोदशा दो तरह की होती है। एक मन कहता है यह कार्य कर लेता हूं और दूसरा यह कार्य नहीं करुं। विचार या सोच की उत्पत्ति मन से होती है। हम तीन योग मन, वचन और काया से जीते हैं। जैसा मन होगा, वैसा वचन होगा और इनका असर हमारी काया पर पड़ता है। मुनिश्री ने आगे कहा कि विज्ञान भी कहता है हमारे मन का प्रभाव हमारे मस्तिष्क पर पड़ता है। मन की कल्पना से हम राई की बात को पहाड़ बना लेते हैं। हमारे मन में तीन तरह के वायरस भय, निराशा और ईर्ष्या विशेष रूप से कार्य करते हैं, जिसके परिणाम स्वरूप तनावग्रस्त या अवसादग्रस्त हो कर हम नकारात्मक विचार की ओर अग्रसर हो जाते हैं और अव्यवहारिक कार्य कर गुजरते हैं।

मुनिश्री ने कुछ उदाहरणों के माध्यम से मार्गदर्शन देते हुए कहा कि भय से ग्रस्त व्यक्ति अपने आंतरिक आंतकवाद से घिरा रहता है, जिसके परिणाम स्वरुप उसका आत्मविश्वास कमजोर हो जाता है। अपने पर विश्वास कर, हम अपने आत्मविश्वास को जागृत कर, भय को दूर कर सकते हैं। हमें हमेशा आशावादी रहना चाहिए क्योंकि आशा हमारे जीवन की किरण, आधार, पतवार है। धार्मिक व्यक्ति वह होता है जो दुःख में सुख और अंधेरे में उजाला खोज ले। मुनिश्री ने आगे कहा कि ईर्ष्या व्यक्ति के दुःख का बहुत बड़ा कारण है। ईष्या पैदा होने का विशेष कारण दूसरों से अपनी तुलना है। जो है उसी में यदि हम सुख खोज लेंगे तो हमारा व परिवार का जीवन स्वर्ग बन जायेगा। मुनि नरेश कुमार जी ने सुमधुर गीतिका का संगान करते हुए विचार व्यक्त किए।

समण संस्कृति, संकाय द्वारा खान्देश आंचलिक कार्यशाला संपन्न

जलगाँव।

जैन विद्या को घर-घर पहुंचाने के उद्देश्य से समण संस्कृति संकाय कार्यशाला का आयोजन

साध्वी प्रबलयशाजी के सान्निध्य में जैन विद्या को घर-घर पहुंचाने के उद्देश्य से समण संस्कृति संकाय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र से कार्यशाला का शुभारम्भ किया गया। स्वागत गीत की प्रस्तुति सुनिता चोरडिया ने अपनी टीम के साथ दी। वीणा छाजेड अपने वक्तव्य से सभी का स्वागत किया। साध्वी प्रबलयशाजी ने अपने उद्बोधन में जैन विद्या के प्रचार प्रसार हेतु आह्वान किया।

तेरापंथ सभा अध्यक्ष पवन सामसुखा ने अपने विचार रखे। डॉ. विजय संचेती ने जैन विद्या एवं समण संस्कृति संकाय के बारे में अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी सौरभप्रभाजी एवं साध्वी सुयशप्रभाजी ने मधुर गीतिका का संगान किया। प्रेमलता सिसोदिया, विमला डागलिया ने अपने विचार व्यक्त किये। आभार ज्ञापन राजू अनूप सेठिया ने किया।

द्वितीय चरण में चौबीस तीर्थंकरों पर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें प्रथम स्थान प्रभा सुराणा, द्वितीय स्थान संगीता सूर्या, तृतीय स्थान विमला डागलिया को मिला।

सभी प्रतियोगियों को पारितोषिक द्वारा सम्मानित किया गया। आंचलिक संयोजिका विदर्भ, सरोज भंडारी ने अपनी भावना रखी। जैन विद्या प्रशिक्षिका अर्पिता सेठिया ने कार्यक्रमों की जानकारी दी। आगम संयोजिका उमा सांखला ने आगम की विशेषता बताई। साक्री केंद्र व्यवस्थापिका जोशीला पगारीया ने 2000 फार्म भरवाने का संकल्प किया।

उमेश सेठिया ने संबोधि एप पर आवेदन भरने की तथा टेक्नोलॉजी की विस्तृत जानकारी दी। खान्देश आंचलिक संयोजिका वीणा छाजेड़ द्वारा भूसावल केन्द्र व्यवस्थापक के पद पर पंकज छाजेड़ की नियुक्ति की गई। प्रशिक्षिका, उपासिका बहनों तथा केन्द्र व्यवस्थापिकों का सम्मान किया गया। मीना छाजेड, रोनक चौरडिया, अपेक्षा सुराणा का विशेष श्रम रहा।

इस कार्यशाला का नियोजन वीणा छाजेड़ (आंचलिक संयोजिका खान्देश) ने किया। जिसमें विशेष योगदान भारती श्यामसुखा (केन्द्र व्यवस्थापिका) राजू अनूप सेठिया (सह केन्द्र व्यवस्थापिका) ने दिया।

DEEPAWALI

PUJAN 2024

DEEPAWALI

PUJAN 2024

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
21 अक्टूबर-27 अक्टूबर, 2024

संक्षिप्त खबर

ऑर्थोपेडिक कैंप एवं निःशुल्क बोन डेनसिटी टेस्ट

साउथ कोलकाता। अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद्, साउथ कोलकाता द्वारा हेल्थ प्वाइंट क्लीनिक के सहयोग से तेरापंथ भवन, साउथ कोलकाता, में निःशुल्क ऑर्थोपेडिक एवं बोन डेंसिटी टेस्ट कैंप का आयोजन किया गया। सामूहिक नमस्कार महामंत्र के जप से कैंप प्रारंभ किया गया। तेयुप साउथ कोलकाता के अध्यक्ष मोहित बैद, मंत्री कुलदीप लूनिया, साउथ सभा के अध्यक्ष बिनोद चोरडिया, मंत्री कमल कोचर, सभा एवं परिषद् सदस्यों की विशेष उपस्थिति रही। ऑर्थोपेडिक कैंप को सफल बनाने में एम्स हॉस्पिटल से डॉ. सौविक पॉल एवं हेल्थ प्वाइंट क्लीनिक से डॉ. राकेश बिनायकिया का सराहनीय श्रम रहा। इस अवसर पर कुल 42 लोगों की जांच हुई। कैंप के संचालन में पर्यवेक्षक रोहित बैद एवं संयोजक पारस नाहटा, संदीप मनोत, जय चोरडिया की अहम भूमिका रही।

साधना के द्वारा नशामुक्त बनें

उदयपुर। डॉ. साध्वी परमयशाजी के सान्निध्य में अणुव्रत सप्ताह के अंतर्गत नशामुक्ति दिवस के कार्यक्रम का समायोजन हुआ। साध्वीश्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री तुलसी ने हिंदुस्तान में एक लाख किमी की पदयात्राएं की। आचार्यश्री महाश्रमण जी की अहिंसा यात्रा के दौरान भी कई लोगों ने नशामुक्ति, नैतिकता, सद्भावना कके संकल्प स्वीकार किए। पद, पैसे, प्रतिष्ठा, पढ़ाई, शक्ति, रूप आदि का नशा तो कईयों को होता है। परंतु प्रभु की भक्ति में नशा लगता नहीं है। जब भगवान में नशा लगता है तो तमाम नशे नौ दो ग्यारह हो जाते हैं। आपने आगे कहा कि दीर्घश्वास प्रेक्षा का प्रयोग करें। 'मैं नशा नहीं करूंगा', ऐसी शब्दावली के माध्यम से संकल्प करें। समवृत्ति श्वास का प्रयोग करें, सौभाग्य का सूरज उगाएं। साध्वी विनम्रयशाजी ने कविता के माध्यम से भावों की प्रस्तुति की। साध्वीवृंद ने नशामुक्ति की प्रेरणा स्वरुप गीत का संगान किया।

निःशुल्क मधुमेह एवं रक्त चाप शिविर

राजाजीनगर। तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम के द्वारा निःशुल्क मधुमेह एवं रक्तचाप शिविर का समायोजन स्थानीय मरियापनपालिया स्थित गायत्री पार्क में आयोजित किया गया जिसमें कुल 57 सदस्य लाभान्वित हुए। तेयुप से मोहन चोरड़िया एवं योगेश मेहता ने अपनी सेवाएं प्रदान की।

ज्ञानशाला प्रशिक्षक परीक्षा का आयोजन

तोशाम। तेरापंथ भवन तोशाम में ज्ञानशाला प्रशिक्षक परीक्षा का आयोजन किया गया। केंद्र निर्देशानुसार परीक्षा व्यवस्थापक नीरज जैन, सभा के मंत्री शंकर जैन, मुख्य प्रशिक्षिका कमलेश जैन ने प्रश्न पत्र के बंद पैकेट पर हस्ताक्षर कर पैकेट खोला। कुल 4 परीक्षार्थियों ने विज्ञ श्रेणी की परीक्षा दी।

तप समाचार

सिंधनूर। साध्वी सिद्धांतश्रीजी एवं साध्वी दर्शितप्रभाजी के सान्निध्य में रचना सिंघवी , कंचन बाई सालेचा ने मासखमण, सुनीता नाहर ने पखवाड़ा, मानमल नाहर, अनीता नाहर, वैशाली नाहर, पिंकी नाहर, दीपक बोहरा, अशोक बोहरा, राजू जीरावला, हर्ष जीरावला ने अठाई, रतनमाला नाहर ने कंठी तप की आराधना की। लता संचेती, चेतन नाहर, सुमित बोहरा , पुष्पा बाघमार, अनीता अलीज़ार, आनंद जीरावला ने चातुर्मास प्रारम्भ से सम्वत्सरी तक निरंतर एकासन एवं महावीर नाहर ने एकांतर तप कर कर्म निर्जरा की।

वास्तुशास्त्र की उपयोगिता एवं स्वास्थ्य विषय पर कार्यशाला का आयोजन

नई दिल्ली।

साध्वी कुन्दनरेखाजी के सान्निध्य एवं तेरापंथ सभा दिल्ली, अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास, अग्रवाल मित्र परिषद के संयुक्त तत्वावधान में वास्तुशास्त्र की उपयोगिता एवं स्वास्थ्य विषय पर एक महत्वपूर्ण कार्यशाला का आयोजन अणुव्रत भवन के प्रांगण में रखा गया।

तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने वास्तु विशेषज्ञ आलोक दूगड़, आगंतुक पदाधिकारी गण सहित पूरी परिषद का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि वास्तु जीवन का विज्ञान है, जैन आगमों में इसका वर्णन विस्तार से उपलब्ध होता है। इस अवसर पर साध्वी कुन्दनरेखा जी ने कहा वास्तु एक विज्ञान है। यह केवल जमीन, मकान, ऑफिस तक सीमित कर दिया गया है। जीवन के बिना वास्तु का कोई उपयोग नहीं।

साध्वीश्री ने कहा जीवन जीने में श्वास का अत्यधिक महत्व है, अगर श्वासों की गति समझ ली जाए, श्वासों के साथ लयबद्ध तरीके से जीना आ जाये तो अद्भुत चमत्कार घटित हो सकता है। श्वासोच्छवास की प्रक्रिया जहां हमारे जीवन में महत्वपूर्ण है वहीं उसकी सजगता आत्म शोधन के मार्ग को प्रशस्त भी करती है। वास्तु का ज्ञान वह विद्या है जो दिशाएं और दशाओं को ही केवल नहीं बदलती बल्कि कर्म निर्जरा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वास्तुविज्ञ आलोक दुगड़ ने वास्तु ज्ञान का गंभीरता से विश्लेषण किया और कहा हमारे जीवन में उसका अत्यधिक प्रभाव पड़ता है, जहां हम निवास करते हैं। उसके साथ-साथ उन्होंने स्वास्थ्य विज्ञान पर चर्चा करते हुए कुछ महत्वपूर्ण जानकारियां जनता के सामने रखी, जो अभी तक वैज्ञानिकों की निगाहों से ओझल हैं।

तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया, अणुव्रत न्यास के पदाधिकारी गण एवं अग्रवाल मित्र परिषद के अध्यक्ष संजय जैन, दिल्ली सभा के मंत्री प्रमोद घोड़ावत आदि वरिष्ठ व्यक्तियों ने आलोक दूगड़ को सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन बाबूलाल दूगड़ ने कुशलता पूर्वक किया।

कर्मों की निर्जरा का सूत्र देता है जैन धर्म

इंदौर।

इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ जैन फोरम एवं धर्म प्रभावना समिति द्वारा मोहता भवन में आयोजित कार्यक्रम में मुनि प्रमाणसागर जी, अभिग्रही राजेश मुनि, साध्वी रचनाश्री जी का संयुक्त सारगर्भित उद्बोधन हुआ।

इस अवसर पर आचार्य श्री महाश्रमणजी जी की सुशिष्या साध्वी रचनाश्री जी ने धर्म सभा को संबोधित करते हुए कहा कि जैन धर्म एक आदर्श एवं महान धर्म है। हमारी आराधना एवं साधना के सूत्र हैं - देव, गुरु, धर्म। जैन धर्म आग्रह प्रधान धर्म नहीं है। जैन धर्म मैत्री का संदेश देता है।

आत्मशुद्धि के लिए भूलों कों भूले। भूल हो भी जाएं तो उसे नहीं वरन् क्षमा के सूत्र को पकड़ें। तपस्वियों के अभिनंदन के अवसर पर साध्वीश्री ने कहा कि जैन धर्म कर्मों की निर्जरा का सूत्र देता है, इसी को शिरोधार्य करते हुए अनुराधा धर्मपत्नी अनिल पुगलिया की आज 85 उपवास की तपस्या है एवं आपने 108 उपवास करने का संकल्प लिया हुआ है।

सूरत में महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में संभवतः 150 मासखमण एवं लगभग अठारह सौ अठाई की तपस्या हुई है। सभी धर्माचार्यों के सान्निध्य में तपस्या के अंकों का अंकन करें तो तपस्या का पेराग्राफ असंख्य हो सकता है। इस अवसर पर मुनि प्रमाण सागर जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि जो तप को धारण करता है उसका जीवन स्वयं अलंकृत हो जाता है एवं ऐसे तपस्वियों का अभिनंदन करने वाला भी अलंकृत हो जाता है। तप की अनुमोदना धर्म की अनुमोदना है।

जीवन में धर्म, धर्मी, धर्मोपासना, पंथ यह चार पड़ाव है। धर्म की आराधना हमारे जीवन की साधना है। पंथ एक नहीं हो सकते, सबकी अपनी श्रद्धा, आस्था एवं मान्यता है। सभी को आपस में जुड़ने एवं जोड़ने की जरूरत है। इस अवसर पर अभिग्रही राजेश मुनि जी ने तप की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए धर्म सभा को संबोधित किया। कांतिलाल बंब ने इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ जैन फोरम की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का सफल संचालन राजेश चौरड़िया द्वारा किया गया।

विशाल भक्ति संध्या का आयोजन

उदयपुर।

अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद द्वारा RNT न्यू ऑडिटोरियम में विशाल भक्ति संध्या का आयोजन किया गया। इस भक्ति संध्या में मुख्य संगायिका राजुल सुराना, सूरत और यश बैद, बीकानेर ने अपनी सुमधुर आवाज़ से सब के मन को मोहित कर दिया। कार्यक्रम में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद से सहमंत्री लक्की कोठारी व उदयपुर शाखा प्रभारी देव चावत की गरिमामय उपस्थिति रही। तेरापंथ सभा उदयपुर, अन्य संघीय संस्थाओं के पदाधिकारीगण व उदयपुर से अभातेयुप साथी भी उपस्थित रहे। तेरापंथ सभा अध्यक्ष कमल नाहटा द्वारा सभी के प्रति मंगल कामना प्रेषित की गई। स्वागत उद्बोधन तेयुप अध्यक्ष भूपेश खमेसरा द्वारा किया गया एवं आगामी समय में गुरुदेव के उदयपुर पदार्पण की संभावना को लेकर युवा शक्ति के संगठन को मजबूत करने की एवं कार्यक्रमों में सभी के सहयोग की अपेक्षा की।

तेयुप उदयपुर ने सभी अर्थ प्रदाताओं का सम्मान किया। मंच संचालन उपाध्यक्ष व कार्यक्रम संयोजक अशोक चौरडिया ने किया एवं आभार मंत्री साजन मांडोत ने किया।

अभातेयुप निर्देशित मंथन 'कल-आज और कल' के विभिन्न आयोजन

चलथान

अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद चलथान द्वारा 'मंथन : कल, आज और कल' कार्यक्रम का आयोजन तेरापंथ भवन चलथान में किया गया। वर्तमान तेयुप टीम ने पधारे हुए पूर्व अध्यक्ष एवं मंत्रीगण का स्वागत किया। नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत के पश्चात अध्यक्ष दीपक खाब्या ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन कर अपना स्वागत वक्तव्य दिया। मंत्री राकेश लोढ़ा ने कार्यक्रम की संपूर्ण जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम में तेयुप के पूर्व अध्यक्ष एवं मंत्री, अभातेयुप सदस्य एवं तेयुप की समस्त कार्यकारणी टीम की उपस्थिति रही। पूर्व पदाधिकारियों ने नए सदस्यों को तेयुप से जोड़ने, साथियों के व्यक्तित्व विकास पर विशेष ध्यान देने, संगठन को मजबूत बनाने, तेयुप को आर्थिक दृष्टि से मजबूत बनाने, फिट युवा हिट युवा, कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग जैसे उपक्रमों के आयोजन करने हेतु मार्गदर्शन दिया और तेयुप के प्रति मंगलकामना प्रेषित की। सभी तेयुप सदस्यों ने अपने विचार व्यक्त किए और तेयुप के हर कार्य, हर आयाम को पूरे जोश के साथ साकार करने इच्छा व्यक्त की। आभार ज्ञापन सहमंत्री कमलेश बिरानी ने किया।

काजुपाड़ा मुंबई

तेरापंथ युवक परिषद काजुपाड़ा द्वारा अभातेयुप निर्देशित मंथन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। तेयुप अध्यक्ष नरेश पगारिया ने कार्यक्रम की जानकारी प्रदान की। पूर्व अध्यक्ष एवं मंत्री गण ने इस कार्यक्रम की सराहना करते हुए अपने विचार रखे। जिसमें मुख्य रुप से नए सदस्यों की सक्रियता बढाना, पुराने सदस्यों को फिर से जोड़ने का प्रयास करना, सभी सामाजिक कार्यक्रमों को सोशिअल मीडिया में प्रस्तुत करना, कार्यक्रमों को बेहतर बनाने के लिए रचनात्मक तत्व जोड़ना आदि विषयों पर विचार विमर्श किया गया।

हैदराबाद

अभातेयुप द्वारा संगठन के क्षेत्र में निर्देशित कार्यक्रम मंथन का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद, हैदराबाद द्वारा जैन तेरापंथ भवन डी. वी. कॉलोनी में किया गया। नमस्कार महामंत्र के सामूहिक संगान से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ, विजय गीत का संगान किशोर मंडल एवं कन्या मंडल ने किया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन पूर्व अध्यक्ष अमृत आंचलिया ने किया। इससे पूर्व मार्चपास्ट करते हुए किशोर मंडल ने उपस्थित सभी गणमान्यजन को एक परेड के माध्यम से कार्यक्रम स्थल पर पहुँचाया। तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष अभिनंदन नाहटा ने समस्त पूर्व अध्यक्ष एवं मंत्री का स्वागत करते हुए अभिनंदन किया और संस्था को गौरवशाली तेयुप के रूप में उल्लेखित करते हुए आरंभ से अभी तक की संगठन की यात्रा में सभी पूर्व नेतृत्व, पदाधिकारीगण, उनकी कार्यकारिणी टीम और कार्यकाल को याद करते हुए उनके श्रम को नमन किया । संगठन मंत्री जिनेंद्र बैद ने सभी कार्यकाल के मुख्य बिंदुओं पर प्रकाश डाला। उपाध्यक्ष मनीष पटावरी ने सभी महानुभावों के समक्ष जिज्ञासाएं रखते हुए उनके समाधान हेतु निवेदन किया और सभी ने पूरी सहभागिता के साथ अपने विचारों से परिषद् को लाभान्वित किया। तेयुप हैदराबाद के पूर्व अध्यक्ष एवं पूर्व मंत्री गण की गरिमामय उपस्थिति रही। संगठन के कल, आज और कल पर विचार विमर्श करते हुए संपूर्ण पूर्व अध्यक्षों एवं मंत्रियों ने मुख्य बिंदुओं पर प्रकाश डाला, अपने अनुभवों को साझा किया और संगठन को सुदृढ़ करने हेतु अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के संयोजक के रूप में संगठन मंत्री जिनेंद्र बैद, प्रेम प्रकाश पुगलिया व श्रेयांश नाहटा ने अपनी सेवाएं दी। मंत्री अनिल दुगड़ ने सभी का आभार व्यक्त किया।

उधना

तेरापंथ युवक परिषद्, उधना द्वारा मंथन (कल, आज और कल) कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में उधना के सभी पूर्व अध्यक्षों और पूर्व मंत्रियों का स्नेहिल सम्मान किया गया। मंथन के दौरान तेयुप उधना को आगे बढ़ाने, संगठन को नई ऊंचाइयां प्रदान करने हेतु विचार विमर्श किया गया। आयोजन में जोश, विचारशीलता और संकल्प का अद्भुत संगम देखने को मिला। कार्यक्रम का संयोजन मंत्री अर्पित नाहर ने और आभार ज्ञापन संयोजक अनिल सिंघवी ने किया। इस अवसर पर अभातेयुप राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जयेश मेहता, तेयुप उधना शाखा प्रभारी कुलदीप कोठारी, तेयुप उधना अध्यक्ष गौतम आंचलिया, तेरापंथ सभा उधना के अध्यक्ष निर्मल चपलोत, महासभा से लक्ष्मीलाल बाफना, अनिल चंडालिया और संपत आंचलिया ने भी अपने विचार व्यक्त किए। अभातेयुप साथी गण भी इस अवसर पर विशेष रूप से उपस्थित थे।

गाँधीनगर, दिल्ली

अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद् गाँधीनगर-दिल्ली ने तेरापंथ भवन, कृष्णानगर, दिल्ली में मंथन कार्यक्रम का आयोजन किया। साथ ही तेयुप गाँधीनगर-दिल्ली से अध्यक्ष अशोक सिंघी, उपाध्यक्ष प्रथम क्रांति बरड़िया, मंत्री प्रकाश सुराणा, तपोयज्ञ प्रभारी धीरज बोथरा, ज्ञानशाला सहप्रभारी दीपक फलोदिया, किशोर मंडल प्रभारी निशांत दुगड़, सहप्रभारी सौरभ सिंघी के साथ तेयुप कार्यकारिणी सदस्यों ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कर इस आयोजन को सफल बनाया। मंथन के अंतर्गत तेयुप गाँधीनगर-दिल्ली को आगे बढ़ाने और संगठन को नई ऊंचाइयों तक ले जाने हेतु विचार विमर्श किया गया। तेयुप गाँधीनगर-दिल्ली के परामर्शक जतन श्यामसुखा, दीपक फलोदिया एवं अन्य साथियों ने बड़े अच्छे ढंग से मंथन के चिंतनशील व करणीय कार्यों को परिषद को समझाया। कार्यक्रम के अंत में आभार ज्ञापन किशोर मंडल सहप्रभारी सौरभ सिंघी ने किया।

फरीदाबाद

अभातेयुप निर्देशित मंथन का आयोजन तेयुप फरीदाबाद द्वारा तेरापंथ भवन के प्रांगण में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के सम्मुच्चारण से हुआ। विजयगीत का संगान विवेक बैद, सुनिल बैद, अभिनव बैद एवं जितेंद्र लूनिया ने किया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन विकास सुराणा ने किया। विनीत बैद ने अभातेयुप से पधारे सभी सदस्यगण, तेयुप फरीदाबाद के पूर्व अध्यक्ष एवं मंत्री का अभिनंदन किया। विकास सुराणा ने फरीदाबाद श्रावक समाज व तेयुप के साथियों को हर आयाम को क्रियान्वित करने हेतु साधुवाद दिया। मंत्री जितेंद्र लूनिया ने मंथन कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। कार्यक्रम के प्रथम चरण में अभूतपूर्व अध्यक्ष एवं मंत्री का संक्षिप्त परिचय और उनके योगदान का उल्लेख किया गया। इसी क्रम में नए सदस्यों का भी परिचय हुआ और अंत में जिज्ञासा समाधान का भी सत्र रखा गया, जिसमें सदस्यों ने जिज्ञासाएं प्रस्तुत की जिनका समाधान शाखा प्रभारी विकास सुराणा द्वारा दिया गया। आभार ज्ञापन मंत्री जितेंद्र लूनिया द्वारा किया गया। इस अवसर पर तेयुप फरीदाबाद के शाखा प्रभारी विकास सुराणा, अभातेयुप कार्यसमिति सदस्य अमित डूंगरवाल, विनय लिंगा एवं राजेश जैन की गरिमामय उपस्थिति रही।

इचलकरंजी

तेयुप इचलकरंजी द्वारा मंथन : कल, आज और कल का आयोजन तेरापंथ भवन इचलकरंजी में हुआ। 'शासनश्री' साध्वी कंचनप्रभाजी से मंगल पाठ श्रवण कर कार्यक्रम की शुरुआत की गई। अभातेयुप अध्यक्ष रमेश डागा ने वीडियो कॉल के द्वारा तेयुप इचलकरंजी को मंथन कार्यक्रम के लिए शुभकामना प्रेषित की। विजयगीत का संगान तेयुप सदस्यों द्वारा किया गया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन महासभा कार्यकारिणी सदस्य एवं भूतपूर्व अध्यक्ष पुष्पराज संकलेचा ने किया। तेयुप अध्यक्ष अनिल छाजेड़ ने स्वागत करते हुए पूर्व अध्यक्ष एवं मंत्री का संक्षिप्त परिचय देते हुए अभिनंदन किया। अभूतपूर्व अध्यक्ष दिनेश छाजेड़ ने स्वरचित गीत की प्रस्तुति दी। पूर्व अध्यक्षों का तिलक एवं जैन पट्ट द्वारा स्वागत किया गया। मंथन कार्यशाला में कल, आज और कल के बारे में विस्तृत चर्चा हुई। इस कार्यशाला में सभी अभूतपूर्व अध्यक्षों के साथ पूर्व मंत्री एवं वर्तमान पदाधिकारीगण ने भाग लिया और अपने अनुभव साझा किए। सभी भूतपूर्व अध्यक्ष एवं मंत्री को परिषद् की ओर से स्मृति चिन्ह भेंट दे कर सम्मान किया गया। संयोजक एवं तेयुप उपाध्यक्ष मुकेश बालर ने मंच संचालन किया। मंत्री अंकुश बाफना ने आभार ज्ञापन किया।

दिल्ली

तेरापंथ युवक परिषद् दिल्ली द्वारा मंथन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य परिषद के सदस्यों को संगठन के प्रति अधिक सक्रिय बनाने और नए सदस्यों को जोड़ने के लिए विचार-विमर्श करना था। पूर्व अध्यक्षों के मार्गदर्शन में इस बात पर चर्चा की गई कि किस प्रकार संगठनात्मक गतिविधियों को विस्तार देकर अधिक से अधिक युवाओं को परिषद के साथ जोड़ा जा सकता है। पूर्व अध्यक्षों ने यह सुझाव दिया कि तेयुप द्वारा समय-समय पर क्षेत्रीय स्तर पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए।कार्यक्रम के अंत में तेरापंथ युवक परिषद् दिल्ली के अध्यक्ष राकेश बैंगाणी, उपाध्यक्ष मुकेश छाजेड़, मंत्री मुदित लोढ़ा, और सहमंत्री करुण सेठिया ने पूर्व अध्यक्ष पुखराज लोढ़ा, विकास सुराना, और ABTYP दिल्ली शाखा प्रभारी अंकुर लुनिया को साहित्य भेंट कर उनका अभिनंदन किया।

इसके साथ ही परिषद् ने दायित्वबोध कार्यशाला का आयोजन किया, जिसमें क्षेत्रीय संयोजक, सह-संयोजक, प्रभारी और सह-प्रभारी उपस्थित थे। इसका उद्देश्य परिषद के आयामों की जानकारी देकर भविष्य के कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक आयोजित करना था। युवाओं को सक्रिय रूप से जोड़ने और कार्यक्रमों को योजनाबद्ध तरीके से लागू करने पर चर्चा हुई। पूर्व अध्यक्ष पुखराज लोढ़ा, विकास सुराना और ABTYP दिल्ली प्रभारी अंकुर लुनिया ने सदस्यों को प्रेरित किया। वर्तमान अध्यक्ष राकेश बैंगाणी ने सदस्यों से कार्यक्रमों में उत्साह और जागरूकता के साथ भाग लेने का आग्रह किया।

राजाजीनगर

तेयुप राजाजीनगर द्वारा मंथन का आयोजन शनिवारीय सामायिक आराधना से हुआ। नमस्कार महामंत्र और विजय गीत के साथ श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया गया। अध्यक्ष कमलेश चौरडिया ने पूर्व अध्यक्षों और मंत्रियों का स्वागत करते हुए मंथन जैसे आयामों की महत्ता पर जोर दिया। संस्थापक अध्यक्ष सुनिल बाफना ने एटीडीसी के अनुभव साझा किए और आचार्य तुलसी जैन हॉस्टल व CSR पर चर्चा हुई। पूर्व अध्यक्षों ने संगठन, नेतृत्व और वित्तीय योजनाओं पर विचार रखे। परामर्शक प्रवीण नाहर ने मंथन की सराहना की। कार्यक्रम का संचालन व आभार तेयुप मंत्री जयंतीलाल गांधी ने किया।

नालासोपारा

तेरापंथ युवक परिषद् नालासोपारा द्वारा आयोजित मंथन कार्यक्रम की शुरुआत विजय गीत द्वारा की गई। पूर्व अध्यक्ष एवं जैन संस्कारक पारस बाफना ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। तेयुप अध्यक्ष मनोज सोलंकी ने सभी का स्वागत किया। सभी पूर्व अध्यक्ष, मंत्री एवं वर्तमान कार्यसमिति के मंथन से किशोर मंडल, फिट युवा हिट युवा, बारह व्रत, नेत्रदान, जैन संस्कार विधि, संगठन, अर्थ संग्रह आदि अनेकों बिंदुओं पर विचार विमर्श हुआ। मंच संचालन संगठन मंत्री अर्पित ढालावत ने तथ आभार ज्ञापन मंत्री दीपक वागरेचा ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
21 अक्टूबर-27 अक्टूबर, 2024

साध्वी धैर्यप्रभाजी के प्रति चारित्रात्माओं के उद्‌गार

जो चट्टानों में ना उलझे, वह झरना किस काम का

● साध्वी मधुरप्रभा ●

तारण तरण ज्योतिचरण आचार्य श्री महाश्रमण जी की पवित्र आभावलय का अवलंबन लेकर न जाने कितने साधक-साधिकाओं ने अपनी जीवन नैया को पार लगाया है, उसका मूर्त उदाहरण है - तपोमूर्ति साध्वी धैर्यप्रभाजी। जिन्होंने अपने लघु संयम काल में इस सफर को एक प्रेरक मुकाम तक पहुंचाया।

हे कीर्तिधर ! कीर्तिपुरुष, यह आपकी तेजस्वी संतता का ही पुण्य प्रताप है कि चेन्नई पावस में चेन्नई का एक खुशहाल बोहरा परिवार संसार समुद्र को छोड़ शासन समुद्र में सम्मिलित हुआ। केवल सम्मिलित ही नहीं अपितु इस परिकर का प्रत्येक सदस्य अपनी योग्यता और सामर्थ्य के अनुरूप संघ चमन में सेवा एवं साधनारत है।

"मुसीबत से ही निकलती है शख्सियत इंसान की साहब।
जो चट्टानों में ना उलझे, वह झरना किस काम का।।"

चट्टान जैसी मजबूत मनोबली साध्वी धैर्यप्रभाजी का ही वज्र संकल्प संपूर्ण परिवार को अनिकेत पंथ का पथिक बना पाया।

यह धैर्यप्रभाजी का वज्र संकल्प ही था जो उन्हें स्वावलंबी बनने और अपनी निर्जरा करते रहने की प्रेरणा सदैव देता रहा।

यह धैर्यप्रभाजी का वज्र संकल्प ही था जो उन्हें अविरल तपमय जीवन जीने को प्रेरित करता रहा।

यह धैर्यप्रभाजी का वज्र संकल्प ही था जिससे उन्होंने महाश्रमण दीक्षा कल्याण वर्ष के सभी संकल्पों को पूर्ण कर अपने आराध्य की अर्चना तप गुलदस्ते से की।

'Don't pull of anything until tomorrow, what you know must be done today, tomorrow just might never come.'

इस कथन के अनुसार लगता है धैर्यप्रभाजी ने इसे अपना आधार बनाकर कदम दर कदम अपने चरणों को गतिमान करती रहीं और अपने सारे कार्यों का सिद्धार्थ पा लिया।

6 अक्टूबर 2005 को उन्होंने मुझे और साध्वी सिद्धार्थप्रभाजी को पारमार्थिक शिक्षण संस्था में प्रवेश हेतु चेन्नई से विदा किया। वे हम दोनों के सम्मुख इस तरह विदा होगी, कौन जानता था? संघ में बाद में आकर, पहले उत्कृष्ट साधना कर, अपने सौम्य व्यवहार कौशल से सबके लिए एक मिसाल बनकर आत्म स्वरूप की दिशा में प्रस्थित हो गई। अंत में उसे दिव्य आत्मा, तपोमूर्ति साध्वी धैर्यप्रभाजी के लिए तहे दिल से यही मनोभाव व्यक्त करती हूं कि वह शीघ्र सिद्धश्री का वरण करें।

घोर तपस्वी की श्रेणी में अंकित होगा तेरा नाम

● साध्वी भास्करप्रभा ●

तब की ज्योत जली पावन, आंगन में उजियार।
साहसमय यह कदम तुम्हारा, करने आत्मोद्धार।
आया रे आया तप का यह त्यौहार, लेकर संयममय उपहार।।

धैर्यप्रभा का धैर्य अडौल, हिम्मत खूब दिखाई है।
तप से अपने जीवन की राहें नहीं सजाई है।
देखी ममता अरु समता, तुम पर हमको नाज है।

फौलादी संकल्पों से किया तप आगाज है।
तप की अमर निशानी है, अचरज भरी कहानी है।
शक्ति भक्ति से सज्जित है, सांसों का हर तार।।

तन का सार निकाला तुमने, गुरु सान्निध्य में गुरुत्तर काम।
घोर तपस्वी की श्रेणी में, अंकित होगा तेरा नाम।
ज्योति चरण के आभावलय में जीती तुमने बड़ी है।

मोह मिटाया देह का, विदेह साधना साधी है।
ऐतिहासिक दीक्षा तुम्हारी है, ऐतिहासिक तप की क्यारी है।
शुक्ल ध्यान की श्रेणी चढ़कर, करो साक्षात्कार।।

गण की नींवे तप से गहरी, भिक्षु का वरदान है।
महातपस्वी की शरण पा महातप में प्रस्थान है।
उदितोदित जीवन हो तेरा मंगल भाव सजाते हैं।

तप की महिमा देवलोक से, देवता भी गाते हैं।
कैसी रजपूती दिखलाई सुनकर सब की गति चकराई।
उर्ध्वारोहण हो आत्मा का, भाव भरे उद्‌गार।।

❖ जहां तक संभव हो सके, परावलंबी बनने से बचें
❖ आदमी को पुण्य की भी इच्छा नहीं करना चाहिए। उसे हेय और उपादेय को अच्छी तरह जानकर हेय को छोड़ने और उपादेय को ग्रहण करने का प्रयत्न करना चाहिए।
❖ जो व्यक्ति भाग्य भरोसे बैठ जाता है, पुरुषार्थ नहीं करता, मेरी दृष्टि में वह दुनिया का अभागा व्यक्ति है।

– आचार्य श्री महाश्रमण

गण रो सुयश बढाय़ो

● साध्वी त्रिशलाकुमारी ●

तप है मुक्ति रो सोपान, प्रभु वीर बतायो।
थांरी अद्भुत अनुपम तपस्या, गण रो सुयश बढाय़ो।।

धन्ना मुनिवर क्यूं तन री, ममता तोड़ी,
खाणै पीणै री आसक्ति छोड़ी।
थांरी अद्भुत समता देख मनड़ो हरसायो।।

धुन रा धुनी थे पक्का, हिम्मत भारी,
थांरी तपस्या लागै, इचरजकारी।
मृन्मय देही में चिन्मय रो अनुपम दीप जलायो।।

धैर्यप्रभा नाम सार्थक, धैर्य गुण धारी,
सिद्धार्थ पुत्री सेवा साझै है भारी।
तेजस्वी पुत्री सेवा साझै है भारी।
मुनि कौशल रे मन खुशियां, जीवन सफल बणायो।।

महासतिवर प्रतिदिन मंगल पाठ सुणावै,
थांरो मनोबल देख मन चकरावै।
हेमरेखा जी ने तपसण सेवा लाभ दिरायो।।

तर्ज : बाबै भीखणजी रो नाम जपूं भोर-भोर में

धैर्यप्रभा का अजब धैर्य

● रमेश चंद बोहरा ●

धैर्यप्रभा के अजब धैर्य का, अभिनंदन करते हैं।
योग भोग की समन्वित ज्योति का, वंदन करते हैं।।

गृहस्थ जीवन में रहे साथ हम, जिया रंग रंगीला।
भोग और फैशन संग पहना गहना स्वर्णिम पीला।।

चेन्नई में जब भी मिलते थे, हमको देते पूरा मान।
शीतल बिटिया की इच्छा को, दिया पूर्ण सम्मान।।

बोर कंदोरा बाजूबंद और पहना नवलख हार।
सुबह उठते ही लिपिस्टिक, करते निज श्रृंगार।।

चेन्नई के गुरु पावस में, बदल गया सारा संसार।
पूरे परिकर ने छोड़ भोग, थामा योग का द्वार।।

निकेत छोड़ अनिकेत बने, धैर्य कौशल तेजस्वी साथ।
चेन्नई का गौरव गगन तक, सिद्धार्थ दीक्षा के बाद।।

गुरु चरणों में सब सनाथ हैं, गुरु सबके रखवाले हैं।
तेजस्वी कौशल अग्रजा, सिद्धार्थप्रभा हिम्मत वाले हैं।।

दो दिवसीय गुरु दर्शन यात्रा का आयोजन

वाशी।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा वाशी नेतृत्व में तेरापंथ समाज वाशी का संघ आचार्य श्री महाश्रमण जी के दर्शनार्थ पंहुचा। संघ के सदस्यों ने आचार्य प्रवर से सामूहिक क्षमायाचना की। तेरापंथ सभा मुंबई के वरिष्ठ उपाध्यक्ष बाबूलाल बाफना एवं यात्रा संयोजक सुशील मेडतवाल ने तेरापंथ समाज वाशी की गतिविधियों के बारे में संक्षिप्त प्रस्तुति दी। सभा अध्यक्ष पंकज चंडालिया एवं तेयुप अध्यक्ष अरविंद खांटेड़ ने आचार्य प्रवर से सन् 2025 में चातुर्मास हेतु निवेदन किया। विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों एवं गणमान्य व्यक्तियों के साथ तेरापंथ समाज वाशी का 160 यात्रियों का गुरु दर्शन यात्रा संघ सूरत पहुंचा था। संघ ने परम पूज्य गुरुदेव, साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी, मुख्य मुनि महावीरकुमारजी एवं साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशाजी के दर्शन कर अपनी भावना व्यक्त की एवं प्रेरणा प्राप्त की। यात्रा के संयोजक ललित बोहरा, सुशील मेडतवाल एवं अजीत कच्छारा ने सराहनीय श्रम नियोजित किया।

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट का आयोजन

सूरत। अणुव्रत विश्व भारती के तत्वावधान में अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत द्वारा अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट का जिला स्तरीय प्रतियोगिता का कार्यक्रम किड जोन, संयम विहार, सूरत में रखा गया। सभी संभागी बच्चों ने पहुंचकर पूज्य गुरुदेव के दर्शन किए एवं मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। सूरत के लगभग 28 स्कूल के विद्यार्थियों ने 'बदले युग की धारा' गीत का संगान किया। आचार्यश्री ने इस संदर्भ में आशीष प्रदान करते हुए कहा कि शिक्षा के साथ अच्छे संस्कार भी विद्यार्थियों को प्रदान किये जाते रहें। विद्यार्थियों के जीवन में अच्छे गुणों और संस्कारों का विकास होता रहे। किड जोन में अणुव्रत गीत गायन, भाषण प्रतियोगिता, कविता प्रतियोगिता, निबंध लेखन एवं चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। इस अवसर पर अणुव्रत विश्वभारती के गुजरात राज्य प्रभारी अर्जुन मेडतवाल, अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत के पूर्व अध्यक्ष विजयकांत खटेड़, पदाधिकारी, संयोजिका रेखा ढालावत एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

चरम तीर्थंकर भगवान महावीर के निर्वाणोत्सव पर विशेष

भगवान महावीर निर्वाण से प्रारंभ हुआ जैनों में दीपावली पर्व

● मुनि कमलकुमार ●

जैन धर्म में भगवान महावीर के निर्वाण से ही दीपावली पर्व प्रारम्भ हुआ। इसलिए प्रायः जैन लोग अमावस्या के दिन को ही महत्व देते हैं। अक्सर लोग दिवाली चतुर्दशी को भी मना लेते हैं पर जैन धर्मावलंबी भगवान महावीर के निर्वाण दिवस के दिन ही दीपावली मनाते हैं। तीर्थंकरों के पंच कल्याणक होते हैं- च्यवन, जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान और निर्वाण। इन पांचों अवसरों पर देवता उत्सव मनाते हैं। च्यवन अर्थात् जब जीव च्यव करके माता की कुक्षि में आता है। उस समय सभी को प्रसन्नता होती है कि यह जीव जन्म लेकर तीर्थंकर बनकर स्व-पर कल्याणकारी बनेगा। इसी प्रकार जन्म के समय, दीक्षा और केवलज्ञान ही नहीं, निर्वाण पद की प्राप्ति तक भी देवता उत्सव मनाते हैं।

भगवान महावीर जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर हुए। उनका जन्म बिहार प्रांत के अंतर्गत कुण्डलपुर ग्राम में हुआ और निर्वाण पावापुरी में कार्तिक अमावस्या की मध्यरात्रि में हुआ। भगवान महावीर के निर्वाण का संवाद सुन चारों तरफ से लोगों का अंतिम दर्शन के लिए ताँता लग गया। पावा के लोगों ने सोचा कि इस अंधकार में लोग दुर्घटना का शिकार ना हो जाए इसलिए घर-घर घी के दीपक जलाए गए कि अंधेरे से राहत मिल सके। उस समय विद्युत का आविष्कार नही हुआ था, इसलिए दीपक जलाये गए। परन्तु अब तो गांव-गांव ही नहीं, घर-घर में बिजली का प्रकाश देखने को मिलता है।इसलिए लोगों को दीपक से होनेवाली तेजस्काय, वायुकाय और त्रसकाय की हिंसा से बचने का प्रयास करना चाहिए। दीपक, मोमबत्ती आदि से कई बार झोपड़ों में आग भी लग जाती है, इससे जनहानि, धनहानि भी हो जाती है। हम जैन हैं, हमें ज्यादा से ज्यादा अहिंसा, संयम, तप का पथ अपनाना चाहिए। इस बार भगवान महावीर का 2551वां निर्वाण दिवस है। हमें अधिक से अधिक उपवास, बेले, तेले की तपस्या के साथ भगवान के सिद्धांतों व उपदेशों को आत्मसात करने का प्रयास करना चाहिए, जिससे हम भी अपना कल्याण कर सकें।अक्सर दीपावली पर्व पर पटाखे फोड़कर, दीप जलाकर लोग खुशी मनाते हैं, यह कर्म बंधन, धन के अपव्यय के साथ समस्याओं को बढ़ाने वाला है। हमें स्थिर मन से चिंतन करके हिंसा और असंयम से बचकर आत्मसाधना का लक्ष्य बनाना चाहिए। जिससे भगवान की तरह निर्वाण पद प्राप्त नहीं कर सके तो कम से कम अपना नुक्सान तो ना करें। भगवान महावीर के सिद्धान्त उस समय जितने उपयोगी थे उतने वर्तमान युग में भी उपयोगी हैं। मुझे तो ऐसा लगता है कि वे सिद्धांत उस समय से इस समय बहुत ज्यादा उपयोगी हैं। हम भगवान महावीर के अहिंसा, संयम, तप, अनेकांत, अपरिग्रह, आत्मकर्तृत्ववाद को समझें और औरों को समझाने का प्रयास करें जिससे आत्मा, स्वास्थ्य, परिवार, समाज, देश और विश्व का कल्याण हो सके।

दीपावली पर्व पर अधिक लोग अपने दुकान, मकान, संस्थान की साफ सफाई ही नहीं रंग रोगन भी करते हैं, जिससे उनका रूप निखरे परन्तु जब तक आत्मा कि सफाई नहीं होगी तब तक ऊपरी सौंदर्य से शांति और आनंद का वातावरण नहीं बन सकता। इसलिए यथाशक्ति तपस्या, ध्यान, आत्म चिंतन, पौषध, प्रतिक्रमण कर अपनी आत्मा की उज्वलता बढ़े ऐसा प्रयास करने से ही उभयलोक सुधार सकते हैं। मकान, दुकान, संस्थान की शुद्धि के साथ मन की शुद्धि के लिए प्रयत्नशील बनें जिससे दीपावली पर्व वास्तविक प्रकाश पर्व बने।

करने आना होगा फिर से, वीर प्रभु तुमको साक्षात

● साध्वी उदितयशा ●

भौतिकता के कोलाहल में, आध्यात्मिकता का जयनाद।
करने आना होगा फिर से, वीर प्रभु तुमको साक्षात।।

जटिल बने हैं शब्द, शब्द से जटिल-जटिलतम अर्थ स्वरूप,
इसीलिए ही लुप्त हो रहा, संबंधों का अपना रूप।
समझ सके शब्दों की भाषा, ऐसा सरल-सरल अनुवाद,
करने आना होगा फिर से, वीर प्रभु तुमको साक्षात।।

पथ अजाना, लोग अजाने, अपनी खुद की भी पहचान नहीं है,
भटक रहा मन गलियों-गलियों, मंजिल का भी भान नहीं है।
बीहड़ जंगल लगे भयंकर, पुनः उसे करने आबाद,
करने आना होगा फिर से, वीर प्रभु तुमको साक्षात।।

संयम तप के बीज उप्र हैं, सदियों से ही भारत भू पर,
किन्तु आज नहीं मिलता उनको, सम्यक् विधि से सिंचन जी भर।
लहराये संयम की फसलें, ऐसी अनुपम पौष्टिक खाद,
करने आना होगा फिर से, वीर प्रभु तुमको साक्षात।।

मना रहे निर्वाण दिवस हम, रैली, नारे और प्रचार,
नहीं सोचते उतरे कितने, जीवन में वे दिव्य विचार।
महावीर बन कैसे जीएं, भोले भक्तों से संवाद,
करने आना होगा फिर से, वीर प्रभु तुमको साक्षात।।

गुरु दर्शन यात्रा का आयोजन

कांदिवली। युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की शिष्या साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी की प्रेरणा से कांदिवली तेरापंथ समाज द्वारा गुरु दर्शन यात्रा का आयोजन किया। इस यात्रा में लगभग 100 श्रावक-श्राविकाओं का संघ आचार्य श्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में सूरत पहुंचा। संभागियों ने रैली के रूप में प्रवचन पंडाल में पहुंच कर गुरु दर्शन किए व प्रवचन का लाभ लिया। तत्पश्चात दोपहर में गुरु सेवा का लाभ मिला, जिसमें तेयुप अध्यक्ष राकेश सिंघवी ने डॉ. साध्वी मंगलप्रज्ञाजी के चातुर्मासिक कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी।

कल्पेश धाकड़ व निखिल धाकड़ ने गीतिका की प्रस्तुति दी। उपस्थित सदस्यों ने आचार्यश्री से सामूहिक खमत-खामणा की। आचार्य श्री महाश्रमण जी ने फ़रमाया कि कांदिवली समाज को डॉ. मंगलप्रज्ञा जी जैसी विद्वान साध्वी का चातुर्मास मिला है। आगामी 2 महीनों में अधिक से अधिक धर्माराधना का लाभ लें और संघ सेवा करते रहें। मुख्यमुनि महावीर कुमार जी, साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी को भी कांदिवली समाज की गतिविधियों की जानकारी दी गई व खमत-खामणा किया। महिला मंडल ने गीत की प्रस्तुति दी। सभी श्रावक-श्राविकाओं का आभार ज्ञापन कार्याध्यक्ष मुकेश कुमठ ने किया।

'दायित्व हमारा' कार्यशाला का आयोजन

गांधीनगर, बेंगलोर।

तेरापंथ सभा गांधीनगर द्वारा तेरापंथी महासभा के तत्वावधान में आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी उदितयशाजी के सान्निध्य में बैंगलोर स्तरीय कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया।

साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के मंगल उच्चारण द्वारा कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। महासभा अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया।

साध्वी उदितयशाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि तेरापंथ संघ का आधार ही अध्यात्म से जुड़ा है, सभा संस्थाओं को जितना कार्य करना है अपनी व्यवस्थाओं, मर्यादाओं, अनुशासन की परिधि में, गुरु दृष्टि की आराधना को शिरोधार्य कर, अपने शीर्ष नेतृत्व द्वारा प्राप्त निर्देशों की पालना के साथ करना चाहिए। प्रदर्शन से दूर रहकर अपना आध्यात्मिक विकास भी लक्ष्य होना चाहिए। साध्वी

संगीतप्रभाजी ने प्रेरणात्मक उद्बोधन के साथ 'संघ शरण में जो भी आया रहता सदा सलामत है' गीतिका का संगान किया। महासभा अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया ने कार्यशाला की अध्यक्षता के साथ अपना सारगर्भित वक्तव्य प्रदान किया। कार्यकर्ताओं की अर्हताओं, सभा के दायित्व, सभा संचालन इत्यादि पर उपस्थित सभा - संस्थाओं के प्रतिनिधियों को प्रशिक्षण तथा दिशा निर्देश प्रदान किया। इसके साथ ही कार्यकर्ताओं द्वारा प्राप्त जिज्ञासाओं का समुचित समाधान भी दिया। महासभा सहमंत्री मुकेश गादिया ने वक्तव्य, दक्षिण आंचलिक संयोजक प्रकाश लोढ़ा ने राष्ट्रीय अध्यक्ष का परिचय तथा तेरापंथ सभा गांधीनगर अध्यक्ष पारमल भंसाली ने स्वागत वक्तव्य दिया। तेयुप बेंगलुरु की भजन मंडली प्रज्ञा संगीत सुधा ने 'संघ बलिदान मांगता है' गीत की प्रस्तुति दी। बैंगलोर की सभी तेरापंथ सभाओं के अध्यक्ष यथा - विजयनगर से मंगल कोचर, यशवंतपुर से सुरेश बरडिया, राजाजीनगर से अशोक चौधरी, टी दासरहल्ली से भगवतीलाल मांडोत, हनुमंत नगर से गौतम दक, होसकोटे से इंद्रचंद धोका, राजराजेश्वरी नगर से राकेश छाजेड़ के साथ आडगुड़ी सभा सदस्य, गांधीनगर ट्रस्ट अध्यक्ष सुशील चोरड़िया, टीपीएफ राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत मांडोत, अभातेयुप उपाध्यक्ष पवन मांडोत, निर्वतमान सभा अध्यक्ष कमल सिंह दुगड़, तेयुप अध्यक्ष विमल धारीवाल, तेममं अध्यक्षा रिजु डूंगरवाल, टीपीएफ अध्यक्ष हितेश गिरिया, अणुव्रत समिति अध्यक्ष देवराज रायसोनी, ज्ञानशाला परिवार आदि विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारी एवं सदस्य एवं श्रावक-श्राविका समाज ने उपस्थित होकर कार्यशाला को सफल बनाया।

कार्यक्रम के प्रथम चरण का संचालन सभा मंत्री विनोद छाजेड़ ने, द्वितीय चरण का संचालन महासभा कार्यसमिति सदस्य नवनीत मुथा ने तथा आभार महासभा कार्यसमिति सदस्य संजय बांठिया ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
21 अक्टूबर-27 अक्टूबर, 2024

महाश्रमण शासनकाल में बन रहे हैं तपस्या के कीर्तिमान

डोंबिवली।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी के सान्निध्य में मुनि नमिकुमार जी ने 51 दिन की तपस्या के पारणे के 21 दिन बाद ही 27 दिन की तपस्या कर सबको आश्चर्यचकित कर दिया।

मुनि कमल कुमार जी ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि भैक्षव शासन जयवंता शासन है। इस धर्मसंघ में समय-समय पर अनेक तपस्वी साधु-साध्वी और श्रावक-श्राविकाएं हुए हैं, जिन्होंने तपस्या करके अपने आत्म कल्याण के साथ धर्म संघ की प्रभावना भी की है।

वर्तमान में भी तपस्या का क्रम अनवरत चल रहा है। परंतु साढे सात महीने में 16, 18, 19, 51 और 27 की तपस्या करने वाले वर्तमान समय में केवल तेरापंथ धर्म संघ में ही नहीं समग्र जैन समाज में भी एक मात्र मुनि नमिकुमार जी के अलावा सुनने देखने को नहीं मिलते। ये तपस्या भी एक जगह बैठकर नहीं, चलते-फिरते, विहार करते हुए करते हैं। आचार्य श्री महाश्रमण जी के शासनकाल में नए-नए कीर्तिमान बन रहे हैं। उनमें आचार्य प्रवर के ही कर कमरों से दीक्षित मुनि नमिकुमार जी ने तपस्या का अंबार लगा दिया है। एक से 16 तक, 25 से 38 तक की तब की लड़ी के अतिरिक्त 18, 19, 20, 27 आदि तपस्या तीन बार, 31 की तपस्या दो बार, 62 दिन का प्रलम्ब तब एक बार करके अपनी शक्ति का परिचय दिया है, यह स्तुत्य ही नहीं प्रशंसनीय भी है।

मुनि श्री ने मुनि नमिकुमार जी के लिए तीन गीतों का निर्माण कर संगान किया। मुनि नमिकुमार जी ने गुरुदेव श्री महाश्रमण जी के गुणगान करते हुए अपने अग्रगण्य मुनि कमल कुमार जी के प्रोत्साहन एवं सहयोग की प्रशंसा की। मुनि अमन कुमार जी एवं मुनि मुकेश कुमार जी ने अपने उन्नत भावों से तपस्वी मुनिश्री का वर्धापन किया।

भाई-बहनों ने सामायिक के तेलों के साथ उपवास, बेला, तेला, तपस्याओं आदि का संकल्प कर वातावरण को तपस्यामय बना दिया।

मासखमण तप अभिनंदन समारोह का आयोजन

इंदौर।

साध्वी रचनाश्री जी के सान्निध्य में शीतल कच्छारा धर्मपत्नी अमित कच्छारा के मासखमण तप का अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया। साध्वीश्री ने अपने उद्बोधन में कहा - जिस प्रकार गारूडी मंत्रों के द्वारा भयंकर से भयंकर विषधर को पकड़कर उसका विष निकाला जा सकता है। वैसे ही व्यक्ति तपस्या के द्वारा भयंकर से भयंकर से बंधें हुए कर्मों को काट सकता है। सफलता प्राप्त करने का बहुत बड़ा साधन है - तपस्या। चक्रवर्ती भी छह खंड जीतने के लिए 13 बार तेले की आराधना करता है। भगवान ने कहा है- पूर्व कृत कर्मों को क्षीण करने का, तेज धार वाला शस्त्र है तपस्या। साध्वी वृंद ने गीत के द्वारा तपस्या की अनुमोदना की। मासखमण तप के उपलक्ष्य में प्राप्त साध्वीप्रमुखाश्री जी के संदेश का वाचन सभा के अध्यक्ष निर्मल नाहटा ने किया। महिला मंडल ने गीत की प्रस्तुति दी। महिला मंडल की अध्यक्ष ममता सामोता, तेरापंथ युवक परिषद के मंत्री आनंद लोढ़ा, टीपीएफ के अध्यक्ष सोहित कोटडिया ने अनुमोदना के स्वर रखे।

तपस्वी बहन शीतल कच्छारा को सभा की ओर से अभिनंदन प्रत्र भेंट किया गया, जिसका वाचन सभा के मंत्री राकेश भंडारी ने किया। परिवार की ओर से गोपीलाल समोता और डोली कच्छारा ने अपने भाव व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन साध्वी गीतार्थप्रभाजी ने किया।

बच्चों का निःशुल्क हिमोग्लोबिन टेस्ट

राजराजेश्वरीनगर। तेरापंथ युवक परिषद राजराजेश्वरी नगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, डेंटल एवं आई केयर द्वारा स्पर्श ट्रस्ट आंगनवाड़ी सेंटर के 3 से 7 वर्ष तक की आयु के 20 बच्चों का हिमोग्लोबिन टेस्ट निःशुल्क करवाया गया।

111वें आचार्य तुलसी जन्मोत्सव पर विशेष

गुरुवर तुलसी को वंदन

● साध्वी परमयशा ●

जिनकी महामुद्रा में बसती अष्ट सिद्धियां पावन।
गुरुवर तुलसी को वंदन।।

महाप्राण महाभाग गुरुवर एक झलक दिखलावो,
द्वार खड़े हैं भक्त हजारों उनकी आश पुरावो।
करुणासागर आत्मा उजागर चरण धूलि है चन्दन।।

भारत ज्योति विश्व विभूति शत-शत नमन हमारा,
राष्ट्र संत युगप्रधान का जीवन दर्शन ध्रुवतारा।
सात समंदर तक तुम छाए, झूमर वदना नंदन।।

हृदय पटल पर ध्यान लगाओ, छवि मिलेगी मेरी,
महाप्रज्ञ में तुमने देखी अविरल आभा मेरी।
मेरे महाश्रमण का हर अंदाज मानो कुंदन।।

कालजयी कर्तृत्व तुम्हारा किन छंदों में गाएं,
तेजोमय अवदान सुहाने रचते नयी ऋचाएं।
सदियों सदियों अमर रहेंगे अभियानों के स्पंदन।।

तेजस्वी पट्टधर कालू के लेखक चिंतक वाचक,
प्रवचन का नैपुण्य शुभंकर आगम के संपादक।
सरस्वती के वरदपुत्र का परम यशस्वी मंथन।।

लय : हो ऐसा देश...

❖ हर व्यक्ति के मन में कुछ होने की कामना हो। इसके लिए कुछ अपेक्षानुसार कठोर जीवन जीने का अभ्यास करना चाहिए। जीवन में प्रतिस्रोतगामिता रहे।

– आचार्य श्री महाश्रमण

तुलसी देवदार हो

● साध्वी कुमुदप्रभा ●

कार्तिक शुक्ला द्वितीया दिवस है रम्याकार,
बाजे घुंघरू की झंकार हो sss
तुलसी देवदार हो sss
चन्द्रमा सी उज्जवल आभा लगती मोहनगार,
स्वर्ग धरा पर हर्ष अपार हो sss
तुलसी देवदार हो sss ।।

वदना झूमर के अंगज नयन सितारे,
चंदेरी के तेजस्वी भाल हार हियारे।
प्रज्ञा का गहन समंदर श्रुतधर वे मनहार,
चम्पक लाड भ्रात सुखकार हो sss ।।

कालू कर कमलों दीक्षित बन गए मालोमाल,
वत्सलता के शैल शिखर लब्धिधर वाणी विशाल।
बाईस वर्षों में गुरुवर गण के दीदार,
कीर्तिपुरुष शक्ति भण्डार हो sss ।।

चिंता नहीं चिंतन करो सूत्र दिया मनभावन,
सरस्वती के वरदपुत्र का श्रम सिंचन है गण वन।
आगम के संपादन से खूब किया विस्तार,
बहती कल-कल आगम धार हो sss ।।

अणुव्रत का शंखनाद कर चरण बने गतिमान,
प्रेक्षा के दर्पण से विश्व को दिया वरदान।
समण श्रेणी को पहुंचाया सात समंदर पार,
पा. शि. पर उपकार हो sss ।।

संकल्प पुरुष का सुमिरण भरता है नव पुलकन,
उत्सव श्रेयस्कर आया चरणों में है वंदन।
आशीर्वाद दिराओ भगवन जग के तारणहार,
मन वांछित इच्छित दातार हो sss ।।

लय : रुड़ा रंगीला

शांतिपूर्ण ज़िन्दगी का आधार है बारह व्रत

मण्डिया।

साध्वी संयमलताजी के सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद् मण्डिया द्वारा बारह व्रत कार्यशाला का आयोजन किया गया। नवकार महामंत्र के साथ कार्यक्रम की शुरुवात हुई। मंगलाचरण महिला मंडल की बहनों ने किया।

साध्वी संयमलता जी ने कहा - एक महत्वपूर्ण शब्द है - संयम। संयम मन की एकाग्रता, चंचलता को कम करता है। संयम पूर्वक जीवन जीने वाले के लिए नया सूरज उगेगा, नए जीवन की शुरुआत होगी। प्राणी गुलाम है - स्वाद का, गर्मी में AC का, महंगे कपड़ों का, मंहगे फोन का। यदि उसे मालिक बनना है तो संयम करना होगा। सड़कों पर स्पीडब्रेकर होता है जिससे दुर्घटना से बचाव हो जाता है। संयम व व्रत भी ब्रेकर हैं जिससे जीवन का रेजिस्टेंस पावर मजबूत होता है।

साध्वीश्री ने आगे कहा- जो व्यक्ति नियंत्रण करना नहीं जानता, इच्छा का निग्रह करना नहीं जानता, जो इच्छा आती है उसे भोग लेता है, वह शरीर से भी बीमार बन जाता है। व्रत हमारी संकल्प शक्ति को मजबूत बनाता है। कोई भी क्षेत्र हो, चाहे व्यापार हो, राजनीति हो, या सामाजिक हो, वही व्यक्ति सफल होता है जिसका संकल्प मजबूत होता है।

साध्वी मार्दवश्रीजी ने कहा - भारतीय संस्कृति अध्यात्म प्रधान, धर्म प्रधान एवं त्याग प्रधान संस्कृति है। कहा जाता है - इच्छाएं आकाश के समान अनन्त हैं। आकांक्षा दुःख की जननी है। जीवन की आवश्यकताओं में And की जगह End सीमा लगाएं। 12 व्रत हमारे जीवन की इच्छाओं को एक लिमिट में लाता है, जिससे व्यक्ति खुशहाल एवं शांतिपूर्ण जिन्दगी जीता है। मुख्य वक्ता उपासक प्राध्यापक निर्मल नौलखा ने कहा कि सम्यक्त्व अनुपम सुख का भण्डार है, जन्म-मरण की परम्परा को तोड़ने वाला एक सशक्त शस्त्र है। मंजिल प्राप्त करना, हर यात्री का स्वप्न होता है। इसी प्रकार मोक्ष प्राप्त करना भी हर जीव का लक्ष्य होता है। मोक्ष रूपी लक्ष्मी को प्राप्त करने के लिए प्रथम मिथ्या दृष्टि गुणस्थान से जीव को बाहर निकलना पड़ता है। व्रत पर चर्चा करते हुए उपासक नौलखा ने श्रावक-श्राविकाओं को इसकी महत्ता एवं लाभ बताए।

सभी को बारह व्रत समझकर भरवाए एवं त्याग कराए। दो सत्रों में कार्यशाला सम्पन्न हुई, जिसमें श्रावक-श्राविकाओं युवक परिषद् सदस्यों की अच्छी उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन तेरापंथ युवक परिषद् अध्यक्ष कमलेश गोखरू ने किया।

व्यक्तित्व विकास कार्यशाला 'घर बने स्वर्ग' का भव्य आयोजन

हैदराबाद।

अखिल तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद, हैदराबाद द्वारा व्यक्तित्व विकास कार्यशाला 'घर बने स्वर्ग' का आयोजन तेरापंथ भवन, डी.वी. कॉलोनी में हुआ। अध्यक्ष अभिनंदन नाहटा ने कार्यक्रम के महत्व पर प्रकाश डाला।

'शासनश्री' साध्वी शिवमाला जी ने परिवार में सौहार्द बनाए रखने के लिए सहिष्णुता को महत्वपूर्ण बताया और कहा कि वाणी का संयम न होने से रिश्ते बिगड़ जाते हैं। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता, मोटिवेशनल स्पीकर दिनेश बुरड ने परिवार में मतभेदों को दूर करने के लिए प्रेरक विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने सास-बहुओं को गले मिलवाकर उनके रिश्ते मधुर बनाने के सुझाव दिए और सास-बहू की सेल्फी लगाने की सलाह दी।

उन्होंने जीवन में संतुलन बनाए रखने और लालसा से बचने पर जोर दिया। अपने प्रेरणादायक प्रसंगों से जीवनशैली बदलने का आग्रह किया और परिवार में धैर्य और शांति से प्रतिक्रिया देने का महत्व समझाया। बुरड़ ने सदन में उपस्थिति सभी परिवारों को मंच पर लाकर आपस में खमत ख़ामणा करवाया। यह पूरी परिषद के लिए बहुत ही भावुक क्षण बन गया।

कार्यक्रम में लगभग 150 लोगों ने भाग लिया। गणमान्य व्यक्तियों ने मोमेंटो द्वारा दिनेश बुरड का सम्मान किया। कार्यक्रम के आयोजन में सहमंत्री जिनेंद्र सेठिया और संयोजक यश बागरेचा, रवि चोरडिया, शुभम बम्बोली का एवं टीम तेयुप हैदराबाद का विशेष श्रम रहा।

विशेष सहयोग मीनाक्षी सुराना और रीटा सुराना का रहा। मंत्री अनिल दुगड़ ने आभार ज्ञापन किया।

जीवन विज्ञान विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में अहम भूमिका निभाता है

श्रीडूंगरगढ़।

शिक्षा अज्ञान रूपी अंधकार को हटाने का सर्वोत्तम साधन है। शिक्षा के लिए विद्यार्थी को अध्ययन के साथ अभ्यास की भी आवश्यकता रहती है। दोनों का संतुलन ही सर्वांगीण विकास का निमित्त बनता है। यह विचार साध्वी कुंथुश्रीजी ने अणुव्रत समिति श्रीडूंगरगढ़ द्वारा आयोजित जीवन विज्ञान दिवस के अंतर्गत प्रदान किए। साध्वीश्री ने अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अंतिम दिवस अवसर पर समुपस्थित जनमेदिनी को कहा कि वर्तमान शिक्षा पद्धति विद्यार्थी को बौद्धिक रूप से तो सक्षम बना रही है परन्तु बिना चारित्रिक और नैतिक विकास के शिक्षा का स्वरूप अधूरा रह जाता है। ऐसे में आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा जीवन के मूल्यों की पद्धति जीवन विज्ञान को शिक्षा के क्षेत्र में विकसित किया गया। इसका मूल उद्देश्य विद्यार्थियों का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और भावनात्मक विकास करके सर्वांगीण विकास की भूमिका सिद्ध करना है।

कार्यक्रम के प्रभारी पवन कुमार सेठिया ने अपने संयोजकीय वक्तव्य में संतुलित व्यक्तित्त्व निर्माण के लिए प्राणधारा का संतुलन, जैविक संतुलन, आस्था का संतुलन और परिष्कार तत्त्व की वर्तमान उपादेयता पर प्रकाश डाला। संस्था के मंत्री एडवोकेट रणवीर सिंह खीची ने बताया कि कार्यक्रम में संस्कार इन्नोवेटिव, महाराणा प्रताप पब्लिक स्कूल, ब्राइट फ्यूचर, बाल निकेतन, विवेक विद्या विहार विद्यालय के शिक्षक सहित 250 से अधिक विद्यार्थियों ने सहभागिता दर्ज की। सुमित बरड़िया ने स्वागत गीत के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की। साध्वी सुमंगलाश्रीजी और प्रभारी विक्रम मालू ने जीवन विज्ञान की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। उपासक मालचंद भंसाली ने व्यक्तित्त्व विकास का प्रायोगिक प्रशिक्षण विद्यार्थियों को दिया। संस्था के उपाध्यक्ष सत्यनारायण स्वामी ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम में प्रचार मंत्री अशोक झाबक सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

सामंजस्य, समझदारी, समझौते से बनता है सुखद दाम्पत्य जीवन

माधावरम्, चेन्नई।

साध्वी डॉ. गवेषणाश्रीजी के सान्निध्य में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ ट्रस्ट माधावरम् के तत्वावधान में दंपत्ति कार्यशाला - 'दाल-भात साथ-साथ' का आयोजन हुआ। साध्वीश्री ने कहा कि जीवन का हमसफर तो हर कोई ढूंढ लेता है। लेकिन हमसफर के साथ जीवन किस प्रकार जीना है, यह ज्ञान होना बहुत जरूरी है। छोटी-छोटी बातों में जीवन साथी के साथ उलझन से नहीं, सकारात्मक सोच से जीयें। हम अपने मधुर व्यवहार और आदतों से इस पवित्र रिश्ते में उन्नत ऊर्जा का संचार कर सकते हैं। बर्तन को छाबड़ी से रखते या निकालते समय आवाज आ सकती है, लेकिन पड़े रहने पर शांत रहते हैं। इसी तरह दाम्पत्य जीवन में भी कुछ समय के लिए बोलचाल हो सकती है, लेकिन बाद में शांत, प्रशांत हो कर दूसरों के लिए प्रेरणास्पद बनें।

दाम्पत्य जीवन समझदारी, सामंजस्य, समझौते, समता, सहिष्णुता के गुणों से भरपूर बने। हम स्वयं अपने लिए, परिवार, समाज, राष्ट्र के लिए उपयोगी बने। साध्वी मयंकप्रभाजी ने कहा कि दंपत्ति जीवन की राह में एक आग है, तो दूसरा शीतल जल हो जाये। एक अंगारा है, तो दूसरा बर्फ बन जाये तो जीवन गाड़ी का यह पथ व्यवधानों से बच सकता है। यह रिश्ता कांच के शीशे की तरह अति नाजुक है। इसीलिए जीवन मंदिर को सजाने के लिए एक-दूसरे के गुणानुवाद और गुणों का अन्वेषण करें।

साध्वी दक्षप्रभा ने सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की। रश्मि सुराणा ने रेकी से अपने आभामण्डल को पोजिटिव ऐनर्जी से भरने के प्रेक्टिकल प्रयोग करवाए। राकेश खटेड एवं राजेश खटेड ने दम्पत्तियों को आध्यात्मिक गेम्स खिलाए। धन्यवाद ज्ञापन सुरेश रांका ने दिया। प्रबंध न्यासी घीसूलाल बोहरा के साथ

Lessons of Life with Science वर्कशॉप का भव्य आयोजन

चिकमंगलूरु।

मुनि मोहजीत कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, चिकमंगलूरु द्वारा Lessons of Life with Science वर्कशॉप का आयोजन हुआ। मुख्य वक्ता मुनि जयेश कुमारजी ने विज्ञान के प्रायोगिक धरातल पर प्रस्तुति देते हुए कहा विज्ञान का अर्थ है - विशेष ज्ञान।

इसका यह अर्थ नहीं कि विज्ञान सिर्फ ग्रह, नक्षत्रों, तारों और ब्रह्मांड के गंभीर संदर्भों को जानने के लिये ही उपयोगी है अपितु विज्ञान की हर थ्योरी जीवन में नई प्रेरणा का जागरण करने वाली है। महान् वैज्ञानिकों के बारे में जब पढ़ते हैं तो पता चलता है कि अनेक असफलताओं और संघर्ष से जूझने के बावजूद वे कभी हताश नही हुए। निरंतर प्रयास करते रहे।

आज कल तो व्यक्ति एक-दो बार असफल होते ही हार मान लेता है। सोचता है मेरे भाग्य में यह होना लिखा ही नहीं है। पर वैज्ञानिकों के तो एसे अनगिनत उदाहरण हैं जहां सैकडों-हजारों बार असफल होने पर भी उन्होंने प्रयास करना नहीं छोड़ा। संपूर्ण विश्व को अपने महान् अवदानों से उपकृत कर दिया। दुनिया में सबसे बड़ी शक्ति विश्वास है। कई वैज्ञानिक ईश्वर या किसी अदृश्य शक्ति पर विश्वास नहीं करते। पर उनका आत्मविश्वास इतना बेजोड़ होता है कि असंभव प्रतीत होने वाला कार्य भी साकार हो जाता है।

दृढ़ निश्चय से व्यक्ति सफलता के शिखरों को छू सकता है।

व्यक्ति किसी पर विश्वास करे या न करे पर अपने आप पर तो पूर्ण विश्वास रखे। यह मानकर चले दुनिया में ऐसा कुछ नही जो मै ना कर सकूं। इस दृढ़ निश्चय से व्यक्ति सफलता के शिखरों को छू सकता है।

इस अवसर पर मुनि जयेश कुमार जी ने अपनी विज्ञान यात्रा के संदर्भ में जानकारी देते हुए उसमें विशिष्ट योगदान देने वाले मुनि सुखलाल जी एवं वैज्ञानिक करण सिंह सिंघवी का विशेष उल्लेख किया।

कार्यक्रम की शुरुआत टी.पी.एफ.की महिला सदस्याओं द्वारा मंगलाचरण से हुई। उपाध्यक्ष शिल्पा गादिया ने स्वागत किया। मंत्री निखिल गादिया ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। आभार अशोक गादिया ने किया।

अक्टूबर 2024 सप्ताह के विशेष दिन

29 अक्टूबर
भगवान पद्मप्रभु जन्म एवं भगवान अरिष्टनेमि च्यवन

30 अक्टूबर
भगवान पद्मप्रभु दीक्षा कल्याणक

31 अक्टूबर
दीपावली

01 नवम्बर
भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक एवं पक्खी

03 नवम्बर
आचार्यश्री तुलसी जन्म दिवस

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
21 अक्टूबर-27 अक्टूबर, 2024

अनुशासन से विकास का मार्ग प्रशस्त होता है

इंदौर।

साध्वी रचनाश्रीजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन न्यू पलासिया में पांच कार्यक्रम आयोजित किए गए - आध्यात्मिक अनुष्ठान, TPF की शपथ विधि, अनुशासन दिवस, तप अभिनंदन, ज्ञानशाला के बच्चों के उत्साहवर्धन हेतु पारितोषिक। इस अवसर पर साध्वीश्री ने धर्म सभा को संबोधित करते हुए कहा कि अनुशासन से विकास का मार्ग प्रशस्त होता है। अनुशासन व्यक्ति, समाज, राष्ट्र के विकास में सहायक होता है। अनुशासनहीनता विकास में बाधक बनती है। तेरापंथ धर्मसंघ में एक आचार्य के अनुशासना में संभवतः 800 चारित्रात्माओं का समन्वय अनुशासन का सबसे बड़ा उदाहरण है।

इस अवसर पर ब्रह्म कुमारी संस्थान से समागत राजयोगिनी अनिता दीदी ने कहा कि वर्तमान परिवेश में प्रतिक्षण अनुशासन अनिवार्य है। वर्तमान समय में इच्छाएं बढ़ती जा रही हैं इस कारण मनुष्य का उन पर नियंत्रण नहीं है। नियंत्रण नहीं होने के कारण मनुष्य का जीवन सही दिशा में नहीं जा रहा है। अनुशासन के द्वारा मनुष्य सही दिशा में प्रस्थान कर सकता है।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के नव मनोनीत अध्यक्ष चंद्रकुमार भटेरा, मंत्री मोहित कोटडिया एवं सम्पूर्ण टीम का शपथग्रहण कार्यक्रम साध्वीश्री के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा तपस्वी अनुराधा धर्मपत्नी अनिल पुगलिया का 75 उपवास की तपस्या के संकल्प के पूर्व तप अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री ने तप की महत्ता को उल्लेखित करते हुए कहा - भगवान ने कहा है कि तप के द्वारा तपस्वी यशस्वी वर्चस्वी बनता है। तप करने वाला जीव साक्षात शक्ति प्राप्त करता है। साध्वीश्री ने कहा कि जैन धर्म में व्यक्ति की नहीं अपितु गुणों की पूजा होती हैं इसलिए आज तपस्वी अनुराधा का नहीं वरन् उनके विशिष्ट तप का अभिनंदन किया जा रहा है। पूर्व में भी आपने 27 मासखमण की तपस्या की हुई है।

तपस्या आपके आध्यात्मिक विकास में सहायक बने, यही मंगल भावना है। सहवर्ती साध्वीवृंद द्वारा तपस्वी अनुराधा पुगलिया के तप अनुमोदनार्थ गीतिका का संगान किया गया।

तेयुप सदस्यों द्वारा तप अनुमोदनार्थ सामूहिक गीतिका प्रस्तुत की गई। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष निर्मल नाहटा द्वारा वक्तव्य प्रस्तुत किया गया।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी द्वारा प्रेषित संदेश का वाचन महासभा के आंचलिक प्रभारी निलेश ने किया। तेरापंथ सभा के तप अभिनंदन पत्र का वाचन मंत्री राकेश भंडारी द्वारा किया गया। तपस्विनी अनुराधा पुगलिया का तप अभिनंदन निलेश रांका, तेरापंथ सभा अध्यक्ष निर्मल नाहटा, तेयुप अध्यक्ष अर्पित जैन, महिला मंडल मंत्री मोना बंबोरी, TPF अध्यक्ष चंद्रकुमार भटेरा, अणुव्रत समिति अध्यक्ष मनीष कठोतिया द्वारा साहित्य व अभिनंदन पत्र द्वारा किया गया। संचालन सभा के मंत्री राकेश भंडारी द्वारा किया गया।

पर्युषण महापर्व के अवसर पर ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा साध्वीश्री की प्रेरणा से विभिन्न तपस्या उपवास, एकासन, पौषध, संवर, प्रत्याख्यान आदि किए गए। उन सभी बच्चों को सभा द्वारा पुरुस्कृत किया गया। संचालन ज्ञानशाला प्रशिक्षिका मधु फलोदिया द्वारा किया गया। ज्ञानशाला की समस्त प्रशिक्षिकाओं द्वारा सुव्यवस्थित कार्यक्रम से सभी बच्चों के उत्साह में अभिवृद्धि हुई।

पृष्ठ 3 का शेष

चिंतन की धारा...

पाप कर्म के उदय से कष्ट आ सकते हैं, लेकिन समता से कर्म की निर्जरा होती है। किसी अन्य व्यक्ति का कोई प्रभाव नहीं होता, भले ही वह निमित्त बन जाए। यदि किसी का पुण्य प्रबल है, तो कोई उसे हरा नहीं सकता, और यदि पाप प्रबल हो गया, तो कोई उसे बचा नहीं सकता।

उत्तर कर्नाटक आंचलिक सभा से अनेक ज्ञानार्थी पूज्यवर की उपासना में उपस्थित हुए। आंचलिक सभाध्यक्ष राजेन्द्र जीरावला ने अपनी अभिव्यक्ति दी। ज्ञानार्थियों ने अपनी भाव भरी प्रस्तुति दी। पूज्यवर ने आशीर्वचन देते हुए कहा कि बच्चों में ज्ञान और संस्कारों की पुष्टि होती रहे। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

अपरिग्रही और अनासक्त...

यदि प्रवृत्ति के साथ कषाय तीव्र हो, आसक्ति तीव्र हो, और द्वेष आदि हो, तो बंध की स्थिति लंबी हो सकती है। सातवीं नरक का बंध भी 33 सागरोपम का होता है, और अनुत्तर विभाग के बंध की स्थिति भी 31 से 33 सागरोपम तक होती है। साम्परायिक बंध में, जहां पाप कर्म का बंध होता है, वहां कषाय तीव्र होता है, और जहां पुण्य कर्म का बंध होता है, वहां उत्कृष्ट कषाय की मंदता होती है। जो अपरिग्रही और अनासक्त वीर होते हैं, वे प्रवृत्ति करते हुए भी उसमें लिप्त नहीं होते। जो गृहस्थ जीवन जीते हैं, उनमें भाव शुद्धि की भावना रहनी चाहिए। यदि वे प्रवृत्ति करते हुए भी निर्लिप्त रहें, तो वे पापकारी भारी कर्मों के बंधन से बचे रह सकते हैं। प्रवचन के पश्चात सूरत किशोर मंडल और कन्या मंडल ने चौबीसी के गीतों की प्रस्तुति दी। मुम्बई के विराग मधुमालती ने अपनी भावनाएं व्यक्त की। बालिका तनीषा अब्बाणी ने भी अपनी प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

चित्त समाधि कार्यशाला कार्यक्रम का आयोजन

नवरंगपुर। अभातेममं के निर्देशानुसार समणी निर्देशिका जिनप्रज्ञा जी एवं समणी क्षांतिप्रज्ञा जी के सान्निध्य में कैंसर जागरूकता अभियान के तहत चित्त समाधि कार्यक्रम का आयोजन किया गया। समणी जी ने नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत करवाई। समणी जी ने चित्त समाधि के बारे में बताते हुए कहा- उम्र के साथ दृष्टि को भी बदलना चाहिए, पीसफुल लाइफ होना जरूरी है। पीसफुल लाइफ के सन्दर्भ में आठ बातों को समणी जी ने विस्तार से समझाया-डाउटफुल लाइफ नहीं जीना, किसी से ज्यादा अपेक्षा नहीं रखना, आग्रह नहीं करना, दूसरों के गुण देखना, स्थिरीकरण में सहयोग करना, वात्सल्य स्नेह का दान, प्रभावक काम करना आदि।

शिक्षा मंत्री नित्यानंद एवं नवरंगपुर से विधायक गौरी माझी ने समणी जी के दर्शन किए। समणी जी ने उन्हें अहिंसा, नैतिकता, नशामुक्ति की प्रेरणा देते हुए एजुकेशन सिस्टम में पढ़ाई के साथ-साथ बच्चों में संस्कार के बीज वपन की प्रेरणा दी।

बोलती किताब

जैन परंपरा का इतिहास

धर्म की व्यापक धारणा - महावीर की धर्म की धारणा बहुत व्यापक थी। उसका कारण उनकी आस्था का अहिंसक परम्परा में विकसित होना है। वैदिक परम्परा में धर्म की स्वीकृति एक विशिष्ट वर्ग के लिए थी। उनके सामने महावीर ने श्रमण- परम्परा के शाश्वत स्वर को बहुत प्रभावी पद्धति से उच्चारित किया।

श्वेताम्बर-दिगम्बर - दिगम्बर-सम्प्रदाय की स्थापना कब हुई, यह अब भी अनुसंधान सापेक्ष है। परम्परा से इसकी स्थापना वीर निर्वाण की छठी सातवीं शताब्दी में मानी जाती है। श्वेताम्बर नाम कब पड़ा- वह भी अन्वेषण का विषय है। श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनों सापेक्ष शब्द हैं। इनमें से एक का नामकरण होने के बाद ही दूसरे के नामकरण की आवश्यकता हुई।

हृदय-परिवर्तन - मनुष्य की प्रवृत्ति के निमित्त तीन हैं- शक्ति, प्रभाव और सहजवृत्ति। सत्ता से शक्ति, सम्बन्ध से प्रभाव और हृदय परिवर्तन से सहजवृत्ति का उदय होता है। शक्ति राज्य संस्थान का आधार है। प्रभाव समाज-संस्था या भौतिक जीवन का आधार है। सहजेंवृत्ति हृदय की पवित्रता का आधार है।

व्रत - जैन संस्कृति व्रात्यों की संस्कृति है। व्रात्य शब्द का मूल व्रत है। उसका अर्थ है- संयम और संवर। वह आत्मा के सान्निध्य और बाह्य जगत् के प्रति अनासक्ति का सूचक है। व्रत का उपजीवी तत्त्व तप है। उसके उद्भव का मूल जीवन का समर्पण है।

प्राचीनता और नवीनता - पुरानी और नयी पीढ़ी का संघर्ष बहुत पुराना है। पुराने व्यक्ति और पुरानी कृति को मान्यता प्राप्त होती है। नये व्यक्ति और नयी कृति को मान्यता प्राप्त करनी होती है। मनुष्य स्वभाव से इतना उदार नहीं है कि वह सहज ही किसी को मान्यता दे दे। नयी पीढ़ी में मान्यता प्राप्त करने की छटपटाहट होती है और पुरानी पीढ़ी का अपना अहं होता है, अपना मानदण्ड होता है, इसीलिए वह नयी पीढ़ी को नये मानदण्डों के आधार पर मान्यता देने में सकुचाती है

दर्शन शास्त्र - अन्तर्दृष्टि से दृष्ट तत्त्वों का प्रतिपादक शास्त्र दर्शन-शास्त्र कहलाता है। तार्किक ज्ञान से उपलब्ध तत्त्वों तथा तार्किक प्रक्रिया का प्रतिपादक शास्त्र तर्कशास्त्र कहलाता है। आज दोनों प्रकार के शास्त्र बहुत एकात्मक हो गये हैं। अतः दर्शन- शास्त्र शब्द से उन दोनों का बोध होता है।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

पृष्ठ 19 का शेष

माया और आसक्ति..

कुछ लोग तो बाल्यावस्था में ही परिग्रह का त्याग कर देते हैं। साधुओं में संबंधातीत चेतना होती है। साधु का जीवन अपरिग्रह की चेतना, ममत्व से मुक्ति और सांसारिक मोह से मुक्त रहने की अपेक्षा करता है। साधु अपने छोटे परिवार को छोड़कर धर्मसंघ रूपी बड़े परिवार में प्रवेश करते हैं। धर्मसंघ का भाव प्रशस्त होता है। प्रशस्त राग और अप्रशस्त राग में अंतर होता है। प्रशस्त व्यक्ति के प्रति राग परिष्कृत राग है, जबकि सांसारिक राग अप्रशस्त राग है। फिर भी, राग तो राग है, और उसे त्यागना ही होगा। वीर पुरुष ममत्व और मोह को छोड़ देता है। मुख्या प्रवचन से पूर्व आचार्यश्री महाश्रमणजी ने नवान्हिक अनुष्ठान के सातवें दिन आध्यात्मिक अनुष्ठान का क्रम सम्पादित करवाया। साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि सम्यक् दर्शन आध्यात्मिक विकास की आधारशिला है। सम्यक् दर्शन से अज्ञान भी ज्ञान में परिवर्तित हो जाता है। इससे तत्व की जानकारी होती है, चिंतन का दृष्टिकोण बदल जाता है और विवेक का जागरण होता है। सम्यक्तव के पांच लक्षण बताए गए हैं—शम, संवेग, निर्वेद, अनुकंपा और आस्तिक्य। साध्वीवर्या जी ने आस्तिक्य के बारे में विस्तार से समझाया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

ज्ञान और क्रिया के योग से ही संभव है मोक्ष : आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्य प्रवर के पावन सान्निध्य में सैंकड़ों श्रद्धालुओं ने किया आयम्बिल का प्रत्याख्यान

सूरत।
08 अक्टूबर, 2024

अध्यात्म साधना के शिखर पुरुष, आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि आज्ञा का पालन करने वाला व्यक्ति प्रशंसनीय होता है। जो आज्ञा का पालन नहीं करता, वह निर्धन होता है और अपनी अच्छी प्रस्तुति में भी ग्लानि का अनुभव कर सकता है। जो तीर्थंकर की आज्ञा का पालन करता है, वह धनवान और चरित्र संपन्न होता है। वह अपना प्रतिपादन करता है और शुद्ध मार्ग दिखा सकता है।

हमें ज्ञान के साथ आचार को भी महत्व देना चाहिए। ये दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। जब ज्ञान और आचार का संयोजन होता है, तो एक दृष्टि से परिपूर्णता प्राप्त हो सकती है। पहले तीर्थंकर की आज्ञा, धर्म और अहिंसा का ज्ञान होना चाहिए, फिर उनका आचरण किया जाए, तभी सम्यक् पालन हो सकता है। ज्ञान है पर आचार नहीं, तो वह पंगु के समान है। ज्ञान नहीं है, पर आचार है, तो वह अंधे व्यक्ति के समान है। जैन दर्शन कहता है कि जब ज्ञान और क्रिया का योग होता है, तभी मोक्ष संभव होता है।

अहिंसा को जानने पर ही उसका पालन किया जा सकता है। जिस साधना को करना है, पहले उसका ज्ञान होना आवश्यक है, तभी साधना की जा सकती है। इसलिए ज्ञान अत्यंत आवश्यक है। ज्ञान और क्रिया के माध्यम से ही कार्य पूरा हो सकता है। ज्ञान को जानने के बाद उसमें रुचि और आकर्षण उत्पन्न होगा, तभी उसका आचरण किया जा सकेगा। इसलिए ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप—ये चारों मोक्ष प्राप्ति की साधना में आवश्यक हैं।

इन चारों के बाद जो विशेष स्वाध्याय, ज्ञान, सेवा, या तप-जप में संलग्न होता है, वह स्वाध्यायवादी, ज्ञानवादी, सेवावादी या तपस्वी हो सकता है। ये सभी निर्जरा के प्रमुख मार्ग हो सकते हैं। सबकी अपनी-अपनी रुचि हो सकती है, लेकिन मूल न्यूनतम ज्ञान और क्रिया आवश्यक है। उसके बाद व्यक्ति विशेषज्ञ (स्पेशलिस्ट) बन सकता है। विभिन्न दर्शनों की बातों को हमें नयवाद से समझने का प्रयास करना चाहिए। अनेकांतवाद से दृष्टिकोण को समझा जा सकता है।

प्रवचन से पूर्व, पूज्यवर ने आध्यात्मिक अनुष्ठान करवाया। आयंबिल का सामूहिक अनुष्ठान कर रहे लगभग एक हजार से अधिक श्रावक-श्राविकाओं ने श्रीमुख से आयंबिल का प्रत्याख्यान स्वीकार किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

माया और आसक्ति को जीत लेता है वीर पुरुष : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।
09 अक्टूबर, 2024

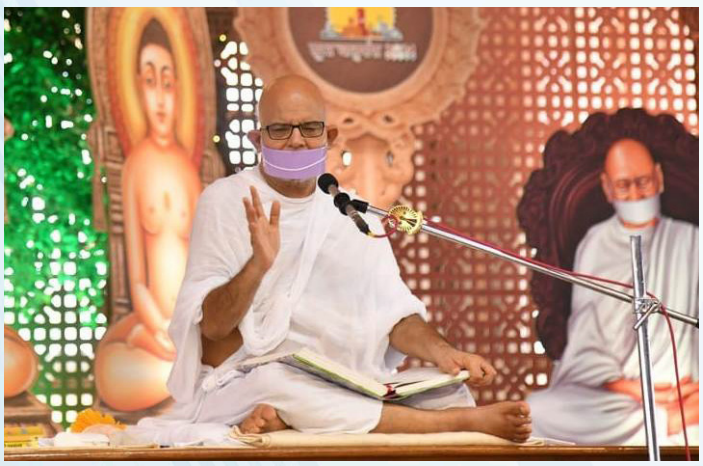

अप्रमत साधक शांति दूत आचार्य श्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि 'आयारो' आगम में कहा गया है— जो मनुष्य वीर होता है, वह माया और आसक्ति को जीतने में समर्थ होता है। वह वीर पुरुष लोक-संयोग का अतिक्रमण कर देता है।

लोक-संयोग में सोना, चांदी, भौतिक पदार्थ, माता-पिता और अन्य पारिवारिक जन के प्रति ममत्व भाव रहता है। एक ओर संसार का मार्ग है, और दूसरी ओर मोक्ष का मार्ग। मोह और ममत्व का भाव संसार का मार्ग है, जबकि निर्मोहता मोक्ष का मार्ग है। जो अध्यात्म के संदर्भ में वीर पुरुष होता है, वह निर्मोह के मार्ग पर चलकर मोक्ष की ओर अग्रसर हो जाता है। आसक्ति में रहने वाला मोहाविल पुरुष संसार के मार्ग पर ही चलता रहता है, और वह अवीर (कायर) होता है।

मोक्ष के मार्ग में मोह का परित्याग आवश्यक होता है, जबकि संसार के मार्ग में मोह का पोषण किया जाता है। चार कषाय और राग-द्वेष आदि मोह के पारिवारिक सदस्य हैं। परिग्रह का त्याग करना वीरता का प्रतीक है। अतीत में कई व्यक्तियों ने संतत्व प्राप्त किया है, कई सतियां हुई हैं। आचार्य भिक्षु ने युवावस्था में ही घर-परिवार और परिग्रह का त्याग कर दिया था।

(शेष पेज 18 पर)

सम्पादकीय

संयम और उत्सव का अनूठा संगम : जैन संस्कार विधि

मनुष्य का जीवन समाज से जुड़ा हुआ है। सामाजिक परंपराएं उसकी जीवनशैली का अभिन्न हिस्सा होती हैं। पारंपरिक तौर पर, हम इन्हें इसलिए अपनाते हैं क्योंकि हमारे पूर्वज इनका पालन करते आए हैं। लेकिन यदि हम इन परंपराओं का विश्लेषण विवेकपूर्ण और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से करें, तो हम कई निरर्थक आडंबरों और प्रथाओं से बच सकते हैं।

जैन समाज की जीवनशैली को दो प्रमुख भागों में विभाजित किया जा सकता है—एक है उपासना और दूसरा सामाजिक जीवन। उपासना का पक्ष पूरी तरह जैन संस्कृति और परंपराओं पर आधारित है, जबकि सामाजिक जीवन में कई बार बाहरी प्रभाव भी देखने को मिलते हैं। परंतु, समय की मांग है कि जैसे हम उपासना में जैनत्व का पालन करते हैं, वैसे ही हमारे सामाजिक जीवन में भी जैन मूल्यों का पालन हो।

स्वप्नद्रष्टा गणाधिपति आचार्य श्री तुलसी ने सामाजिक जीवन में जैनत्व को प्रबल बनाने के लिए 'जैन संस्कार विधि' की अवधारणा को मुख्यधारा में लाने का प्रयास किया। उनका मानना था कि संयम, आस्था, और सादगी की त्रिवेणी ही जैन संस्कार विधि का मूल है। वर्तमान आचार्य श्री महाश्रमणजी का भी यही संदेश है कि जन्म से जैनी होना पूर्व जन्म के अच्छे कर्मों का फल हो सकता है, लेकिन इस जीवन को संयमित रखने से ही आने वाले जीवन को सुधारा जा सकता है।

जीवन में अनेक महत्वपूर्ण पड़ाव आते हैं, इनके अतिरिक्त अनेक पर्व और उत्सव आते हैं जिनमें जैन संस्कार विधि को प्राथमिकता दी जा सकती है। यह विधि मात्र धार्मिक अनुष्ठान नहीं है, बल्कि इसमें वैज्ञानिकता, बुद्धिमता, और व्यवहारिकता का समुचित समन्वय है। जैन संस्कार विधि में ऐसे मंत्रों का उच्चारण होता है जो व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन ला सकते हैं। यह विधि मूल रूप से भावनात्मक जुड़ाव करवाती है क्योंकि इसमें स्वयं के द्वारा स्वयं के प्रति मंगलकामना भी की जाती है। कोई अन्य व्यक्ति आपके मंगल की कामना करे, इसका कितना प्रभाव होता है, वह एक अलग विषय हो सकता है परंतु जब आप स्वयं की आत्मा से जुड़कर मंत्रोच्चार करते हैं तो उसके प्रभाव निश्चित रूप से अधिक शक्तिशाली और सकारात्मक होता है।

जैन संस्कार विधि के बौद्धिक पक्ष को देखें, तो इसमें निरंतर अपेक्षित परिवर्तन के साथ विशिष्ट अवसरों के लिए विशिष्ट मंत्रों का समावेश किया गया है। इसमें व्यक्ति विशेष की नहीं अपितु गुणों को प्राथमिकता दी गई है। इसका एक प्रमुख उदाहरण 'मंगल भावना पत्रक' है, जिसका प्रयोग सभी मांगलिक कार्यों में किया जाता है। व्यावहारिक दृष्टिकोण से, यह विधि आडंबरहीन और सरल है। पश्चिमी संस्कृति में जहां मिनिमलिज्म और आडंबरों से मुक्ति की बात की जा रही है, वहीं जैन संस्कार विधि तो मूलतः इन्हीं सिद्धांतों पर आधारित है।

कई लोगों को यह भ्रांति है कि जैन संस्कार विधि अपनाने से उत्सवों का आनंद कम हो जाएगा, परंतु यह विधि केवल अनावश्यक फूहड़ता और हिंसा से बचने की बात कहती है। इसमें आनंद और खुशी मनाने की कोई रोक नहीं है। पारिवारिक रीति-रिवाज और गीत-संगीत का पूरा आनंद इस विधि में लिया जा सकता है, बस यह ध्यान रखना होता है कि कोई अनावश्यक हिंसा न हो। यहां यह समझना अपेक्षित होगा कि किसी की अनावश्यक हिंसा करके यदि हम अपना मंगल चाहते हैं तो वह जैन संस्कार विधि ही नहीं अपितु हर विधि के अनुसार अनुचित ही होगा।

जैन संस्कार विधि के पुनरुत्थान में तेरापंथ धर्मसंघ के सुश्रावक भोजराज जी संचेती, न्यायाधीश सोहनराज़ जी कोठारी, पदमचन्द जी पटावरी, डालिमचंद जी नौलखा आदि का विशेष श्रम लगा है। वर्तमान में 500 से अधिक संस्कारक इस विधि को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयत्न कर रहे हैं। आज जैन संस्कार विधि जन-जन की विधि बन चुकी है। यह व्यक्ति, परिवार, संघ और समाज के सांस्कृतिक मूल्यों के लिए एक कवच के समान है। इसे स्वीकार करना अर्थात सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों की चिरंजीवी बनने की गारंटी। आइए भगवान महावीर निर्वाणोत्सव - दीपावली के अवसर पर प्रण लें, इस विधि को हर विशेष अवसर पर अपनाएं और प्रचारित भी करें। दीपावली पर आतिशबाजी से भी दूर रहने का प्रयास करें। इन सब प्रयत्नों से हम भगवान महावीर के साथ-साथ उनके आदर्शों को भी मान पाएंगे।

— संपादक

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
21 अक्टूबर-27 अक्टूबर, 2024

तामसिक गुणों को छोड़ सद्गुणों को ग्रहण करने का हो प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

विजया दशमी पर धर्म चक्रवर्ती ने आत्म विजयी बनने की दी अभिप्रेरणा

सूरत।
13 अक्टूबर, 2024

अनंत आस्था के केंद्र आचार्यश्री महाश्रमणजी ने जिनवाणी का अमृत का पान कराते हुए कहा कि आगमों में अनेक प्रकार के विषय वर्जित हैं। आगमों में एक ओर तत्वज्ञान संबंधी बातें मिलती हैं, तो दूसरी ओर कथानक और घटनाएँ भी वर्णित हैं। इसके साथ-साथ इसमें आध्यात्मिक पथदर्शन भी मिलता है। धर्म प्रवचन के संदर्भ में भी आगम वाङ्मय में कुछ दिशा-निर्देश प्राप्त होते हैं।

आयारो में बताया गया है कि साधु को अपरिग्रह की बात, चाहे वह अमीरों के बीच में हो या गरीबों के बीच में, सबके सामने रखनी चाहिए। अमीर और गरीब दोनों को उपदेश और पथदर्शन की आवश्यकता होती है। साधु जो स्वयं सन्यास और त्याग का जीवन जीता है, उसके प्रवचन का गहरा प्रभाव पड़ सकता है, क्योंकि जनता का साधुओं के प्रति श्रद्धा और विश्वास अधिक होता है। साधु के उपदेशों से जनता का कल्याण हो सकता है।

साधु जब धर्म कथा करते हैं और जीवन का पथदर्शन प्रदान करते हैं, तो उसका असर श्रोताओं पर हो सकता है। सुनना भी एक कला है, और आजकल तो साधनों की मदद से घर-घर में प्रवचन आसानी से पहुंच जाता है। साधु के उपदेश सुनकर लोग अपने दुर्व्यसनों को छोड़ सकते हैं। साधु के उपदेश से न केवल दूसरों को बल्कि स्वयं साधु को भी लाभ होता है। जयणा से बोलने पर धर्म का लाभ मिलता है, और साथ ही कर्म निर्जरा भी होती है।

भारत में आज कई पंथ हैं, प्राचीन ग्रंथ हैं और कई संत हैं, जो ज्ञान के खजाने से भरे हुए हैं। आज दशानन रावण के अंत का दिन है। पापी से नहीं, बल्कि पाप से घृणा करो। जैन रामायण की दृष्टि से देखें, तो रावण में भी कुछ विशेषताएँ थीं। रावण ने कहा था कि उत्तम पुरुष परस्त्री की इच्छा नहीं करते। वह चरित्रवान और विद्या-संपन्न पुरुष था। लक्ष्मणजी के द्वारा रावण का वध चक्र के प्रयोग से हुआ था। हमें भीतर के तामसिक गुणों को निकालकर सद्गुणों को अपनाने का प्रयास करना चाहिए। संतों और पंथों से हमें पथदर्शन मिलता है। दस लाख योद्धाओं को जीतने वाला विजयी होता है, लेकिन अपनी आत्मा को जीतने वाला परमजयी होता है। हमें अपने भीतर की आकांक्षाओं को छोड़कर आत्मजयी बनने का प्रयास करना चाहिए।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने कहा कि अक्षय तृतीया और विजया दशमी को शुभ तिथियों के रूप में माना जाता है। आज के दिन नया कार्य प्रारंभ किया जाता है। पुराने समय में लोग शस्त्रों की पूजा करते थे और अपनी विजय के लिए अपने इष्टदेव से प्रार्थना करते थे। वर्तमान में भी शस्त्रों की पूजा होती है, और हर व्यक्ति चाहता है कि उसकी विजय हो और उसमें सद्गुणों का विकास हो।

डाकलिया परिवार ने आचार्यश्री के समक्ष गीत के माध्यम से अपनी भावनाओं को अभिव्यक्ति दी। अंतर्राष्ट्रीय भगवताचार्य पंकजदास व्यास ने आचार्यश्री के समक्ष अपनी भावना व्यक्त की। पशुपतिनाथ मंदिर-नेपाल की व्यवस्था समिति के ग्यारह सदस्यों ने आचार्यश्री के समक्ष अपनी भावनाओं को अभिव्यक्ति दी। आचार्यश्री ने इस संदर्भ में प्रेरणा प्रदान की। कलरएक्स के जयंतीभाई कबूतरवाला ने अपने विचार व्यक्त किये।

तुलसी अमृत निकेतन संस्थान-कानोड़ की ओर से कल्याणसिंह पोखरना ने अपनी अभिव्यक्ति दी। कांतिलाल पीपाडा ने अपने मनोभाव प्रकट किये। सूरत एवं अहमदाबाद-ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी मोहक प्रस्तुतियां दी।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।